उदयपुर संभाग की नम भूमियाँ : पारिस्थितिकी एवं पक्षियों का कलरव

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना, परिंदों का स्वर्ग है उदयपुर अंचल, उदयपुर शहर की नम भूमियाँ, पिछोला झील एवं पिछोला झील में प्राकृतिक टापू	333–334
2.	फतहसागर झील एवं बड़ी तालाब	335
3.	उदयपुर की झीलों में पक्षियों की संख्या में कमी के कारण, उदयपुर की सीमा में नम भूमियाँ, आयड़ नदी, उदयसागर, उदयपुर की निकटवर्ती नम भूमियाँ, प्रवासी पक्षियों को अधिक रास आई, घटते जलीय पक्षी एवं हमारा दायित्व, झीलों में 'नो बोटिंग, नो फिशिंग, नो ट्यूरिज्म जोन'	336
4.	मेनार तालाब (बर्ड विलेज) – ढंड तालाब, ब्रह्म तालाब, परिन्दों को ऊर्जा भरी उड़ान दे रही है, सकारात्मक सोच का संदेश, प्रेम और समर्पण का प्रतीक है – 'सारस क्रेन'	337
5.	प्रवासी पक्षी, ढंड तालाब में डेरा डालते हजारों पक्षियों की मनोहारी अठखेलियाँ, मेनार के जलाशय, असद आर. रहमानी एवं डॉ. सतीश शर्मा के विचार	338
6.	घासा का तालाब (गन्धर्व सागर), बड़वई तालाब, किशन करेरी तालाब	339
7.	बाघदड़ा झील, झाड़ोल तालाब, गेब सागर	340
8.	बांसवाड़ा, गिद्धों की प्रजातियाँ, गिद्धों के संरक्षण के लिए प्रयास	341
9.	दक्षिणी राजस्थान के महत्वपूर्ण जलाशय, नम भूमियाँ, पक्षियों का संरक्षण, उदयपुर की झीलों में मेहमान पंछी, व्हाइट आई पोचार्ड, स्नेक बर्ड, विभिन्न झीलों की बत्तखें	342
10.	पक्षी जगत–देश, राज्य एवं उदयपुर अंचल में महत्व एवं बर्ड वॉचिंग, पक्षी जगत एवं भारत – उदयपुर संभाग, बर्ड वॉचिंग के उद्देश्य एवं महत्व, बर्ड फेयर, झीलों में प्रवासी पक्षी, झीलों में स्थानीय पक्षी	343
11.	राजहंस (फ्लेमिंगों), ग्रीष्म ऋतु में पक्षी, शीत ऋतु में पक्षी, दुर्लभ पक्षी, शाही फाल्कन	344
12.	रामसर समझौता, राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना (एनएलसीपी)	345
13.	नम भूमि का महत्व, नम भूमियों के महत्वपूर्ण तथ्य, नम भूमि के औंझल एवं कम होने के मुख्य कारण, नम भूमि एवं जलवायु परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन का नम भूमि पर प्रभाव, भारत में नम भूमि संरक्षण, कानूनी पहल, राष्ट्रीय नम भूमि संरक्षण कार्यक्रम, उदयपुर जिले में झील, तालाब, बाँध नम भूमि का चिह्निकरण,नम भूमियों की मुख्य खूबियाँ, सई बाँध, भटेवर तालाब, बागोलिया तालाब	346
14.	राजस्थान की महत्वपूर्ण रामसर साईट्स –केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, साँभर लेक	347

प्रस्तावना : कुछ भू–भागों में एक वर्ष में 6 महीनों के लगभग मृदा जल से आवरित या संतृप्त रहकर वहां पर विशेष प्रकार के पारिस्थितिकी तन्त्र का सृजन करती है, उसे नम भूमि की संज्ञा दी जाती है। नम भूमि मनुष्य एवं समस्त प्राणी और वनस्पति जगत के लिए आवश्यक एवं उपयोगी है। यहाँ जीव–जन्तु व पेड़–पौधों की प्रजातियां पायी जाती हैं। नदी, झीलें और समुद्र तट पर ऐसी नम भूमि पायी जाती है जो जीव विविधता, जल शुद्धीकरण, बाढ़ नियंत्रण, तटीय स्थिरता के साथ पर्यावरण स्वच्छता के लिए उत्तरदायी है। नम भूमियों को प्राकृतिक किडनी कहा जावे तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। आर्थिक दृष्टि से भी नम भूमियाँ उपयोगी हैं।

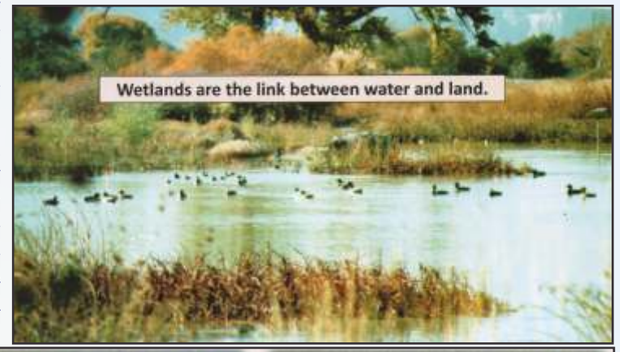

परिंदों का स्वर्ग है उदयपुर अंचल : उदयपुर जिले का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक वैभव विशेषकर नम भूमियाँ जग–विख्यात है। उदयपुर और इसके आसपास की छोटी–बड़ी झीलें और तालाब अति महत्वपूर्ण वेटलेण्ड (नम भूमि) हैं। ये प्रवासी व स्थानीय पक्षियों की पसन्दीदा आवास स्थल है। राज्य के महत्वपूर्ण पक्षी स्थलों में से उदयपुर में जयसमन्द झील एवं अभयारण्य, फुलवारी की नाल एवं सज्जनगढ़ अभयारण्य, उदयपुर झील संकुल, बाघदड़ा एवं सेई बाँध

कुछ महत्त्वपूर्ण पक्षी स्थल हैं। जिले से सटे पड़ौसी जिलों में कुम्भलगढ़, सीतामाता तथा माउण्ट आबू अभयारण्य तथा सरेरी बाँध कुल चार महत्त्वपूर्ण पक्षी स्थल हैं। इस तरह दक्षिण राजस्थान में कुल 10 महत्त्वपूर्ण पक्षी स्थलों का जाल फैला हुआ है। इस अंचल में लगभग 242 प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं। इनमें करीब 102 प्रजातियाँ जलीय एवं 140 प्रजातियाँ स्थलीय पक्षियों की हैं। जलाशयों के तटों व वृक्षों पर विचरण करते देशी–विदेशी परिन्दे और सघन वनाच्छादित क्षेत्रों में उन्मुक्त घूमते वन्यजीवों से इस जिले की अपनी अलग ही पहचान है। उदयपुर शहर की झीलों–तालाबों के साथ ही निकटवर्ती जलाशयों को स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के आदर्श पर्यावास के रूप में सदैव पहचान रही है।

उदयपुर शहर की नम भूमियाँ : उदयपुर झीलों–नम भूमियों का एक संकुल है जो हमें विरासत में मिला है। उसमें पिछोला, रंगसागर, स्वरूपसागर, रूपसागर, फतहसागर, बड़ी तालाब, गोवर्द्धन सागर, दूधतलाई, थूर की पाल, मदार छोटा व बड़ा, उदयसागर आदि जलाशयों एवं आयड़ नदी में बड़ी संख्या में पक्षियों को क्रीड़ाएँ करते हुए देखा जा सकता है। उदयपुर की इन झीलों एवं आसपास के जलाशयों में 150 प्रजातियाँ शीतकालीन प्रवासी पक्षियों की हैं जो प्रतिवर्ष शीतकाल में प्रवास पर आती है। उदयपुर की झीलों (फतहसागर, पिछोला, दूधतलाई, रंगसागर, स्वरूपसागर) को एक स्वीमिंग पुल की तरह दीवारें बनाकर बाँधने का प्रयास जैव विविधता के लिए खतरा है। इन झीलों पर बनाई गई रिंग रोड प्रवासी पक्षियों के प्राकृतिक आवास को समाप्त कर देगी। रिंग रोड पर वाहनों का आवागमन तथा मानवीय हस्तक्षेप पक्षियों के व्यवहार व प्रजनन पर दुष्प्रभाव डालेगा। झील के किनारे बबूल और अन्य झाड़ियाँ पक्षियों के प्रजनन के दौरान घोंसलें बनाने में उपयोगी साबित होती हैं जिनमें कई स्थानीय जलीय पक्षी प्रतिवर्ष मानसून के दौरान प्रजनन करते हैं। पिछले बीस वर्षों में आने वाले पक्षियों का यदि आकलन करें तो धीरे–धीरे पक्षियों की संख्या में कमी हो रही है। शहर की झीलों की बजाय ग्रामीण क्षेत्रों की झीलों में पक्षियों की बड़ी संख्या देखने को मिलती हैं।

मेनार के ढंड तालाब में अठखेलियाँ करते फ्लेमिंगो (राजहंस) के झुण्ड

पिछोला झील एवं प्राकृतिक टापू : उदयपुर की झीलों में पिछोला झील का अपना अहम् स्थान है। यह शहर में स्थित सबसे पुरानी एवं सबसे बड़ी झील है। इस झील के चारों ओर कई टापू जिनमें ढोले वाला मगरी, बुगले वाली मगरी, जगमन्दिर के पीछे टापू, खास ओदी के पास तीन टापू, नटनी का चबूतरा, जंगल सफारी पार्क, गोल्डन पार्क, झामरपोल के पास टापू, हरिदासजी की मगरी पर ट्राईडेन्ट होटल परिसर, प्रताप भण्डारी पार्क आदि पक्षी प्रेमी स्थल हैं। इन टापुओं में अक्टूबर–नवम्बर माह में देश–विदेश के विभिन्न हिस्सों से अच्छी संख्या में प्रवासी पक्षी आते हैं। कुछ स्थानीय जलीय प्रजातियां वर्षभर पिछोला एवं टापुओं में प्रवास करती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि चाँदपोल के पास रंगसागर में स्थित छोटे टापू टीरा मगरी पर प्रजनन काल के दौरान ओपन बिल स्टॉर्क की नीड़ कॉलोनी देखने लायक होती है। झील की परिधि में जगह–जगह लिटल ईग्रेट एवं पॉण्ड

रंगसागर की टीरा मगरी पर ओपन बिल स्टॉर्क की नीड़ कॉलोनी

हेरोन प्रजनन काल में अपनी नीड़ कॉलोनियाँ बनाते हैं। पिछोला झील के सीसारमा छोर पर प्राकृतिक टापू एवं शांत क्षेत्र में पक्षियों को किसी प्रकार की बाधा नहीं थी। दूध तलाई से सीसारमा तक सड़क झील के अधिकतम् जल स्तर पर बनी हुई थी। अधिकतम् जल स्तर एवं पूर्ण जल भराव स्तर के मध्य टापुओं पर बबूल एवं अन्य प्रजातियों के सैकड़ों पेड़ थे। जलीय एवं अन्य पक्षी इस क्षेत्र में बड़े आनन्द व बाधारहित परिस्थिति में प्रवास करते थे। पिछले कुछ वर्षों में पिछोला झील में पक्षियों की संख्या एवं उनकी प्रजातियों की कमी होती जा रही है। इसका मुख्य कारण पिछोला झील के पश्चिमी सीसारमा छोर पर रिंग रोड़, झील भराव स्तर पर बनने से शांति भंग हो रही है। इस क्षेत्र से मिट्टी अनियोजित निकालने से उथले क्षेत्र में भी कमी आ गई है। पिछोला झील में जलीय एवं अन्य पक्षियों की प्रजातियों की वृद्धि के लिए निम्नानुसार प्रयास किये जा सकते हैं :– ● झील का सीसारमा छोर एवं विभिन्न टापुओं को शांत क्षेत्र घोषित किया जाये। यहाँ नाव संचालन, मछली पकड़ने पर पूर्ण प्रतिबन्ध हो। ● इस क्षेत्र को प्राकृतिक पक्षी स्थल के रूप में सुरक्षित करने हेतु नाम पट्ट लगा दिया जाये। ● यह क्षेत्र आतिशबाजी, उत्सव व समारोह आयोजन से मुक्त रखा जाये। ●कुछ क्षेत्र विशेष को टाइफा ग्रास के लिए सुरक्षित छोड़ दिया जाय, यहाँ से जल जीव भोजन प्राप्त कर सकें। ● टापुओं पर पेड़ों की सघनता में वृद्धि के साथ सूखे पेड़ भी गाड़ दिये जाये। ● सीसारमा छोर वाले शांत क्षेत्र में कृत्रिम टापू बनाये जावे जहाँ पौधारोपण के साथ सूखे पेड़ भी गाड़े जावे। ● होटल ट्राईडेन्ट एवं नटनी के चबूतरे के मध्य एक बड़ा टापू है, जिसे पक्षी शरणस्थल के लिए आरक्षित कर मछली पकड़ने वालों के घर एवं नावों से मुक्त किया जावे तथा घने वृक्षारोपण के साथ उथले क्षेत्र को विकसित किया जावे।

पिछोला झील का प्राकृतिक टापू

रंगसागर के मध्य स्थित टीरा मगरी

ब्रह्मपोल तालाब के मध्य स्थित प्राकृतिक टापू

ट्राईडेन्ट होटल के दक्षिणी छोर पर स्थित प्राकृतिक टापू

ट्राईडेन्ट होटल के पास स्थित बड़ा प्राकृतिक टापू

खासओदी क्षेत्र के किनारे स्थित प्राकृतिक टापू

झामरपोल के पास पिछोला के मध्य स्थित टापू

ओपन बिल्ड स्टॉर्क
(Open Billed Stork)

लिटल ईग्रेट
(Little egret)

पॉण्ड हेरॉन
(Pond Heron)

पिछोला झील में अनेक प्राकृतिक टापू जैसे–ढ़ोले वाली एवं बुगले वाली मगरी, टीरा मगरी, ब्रह्मपोल तालाब, ट्राईडेन्ट होटल की पहाड़ी, खासओदी एवं झामरपोल के पास स्थित टापुओं को आरक्षित कर उन्हें पक्षी स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। इसी के साथ पिछोला के पश्चिमी छोर पर स्थित प्रताप भण्डारी पार्क, सीसारमा नदी प्रवेश स्थल के विशाल शांत जल क्षेत्र में कृत्रिम टापू बनाकर स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों को पुनः पिछोला की ओर आकर्षित किया जा सकता है। इस क्षेत्र में नाव संचालन निषेध घोषित किया जावे।

लिटल ईग्रेट समूह

पॉण्ड हेरॉन समूह

पिछोला के पश्चिमी छोर पर सीसारमा नदी के प्रवेश स्थल एवं प्रताप भण्डारी पार्क के पास स्थित विशाल एवं शांत पक्षियों का पसंदीदा जल क्षेत्र : यहाँ पक्षियों के आवासीय स्थल के रूप में कृत्रिम टापू बनाये जाने चाहिये।

फतहसागर झील : उदयपुर की दूसरी बड़ी झील फतहसागर पूर्व में पक्षियों को बहुत प्रिय थी लेकिन पर्यावरणविदों ने कृत्रिम निर्माणों को शहर की इस झील के प्राकृतिक स्वरूप को बर्बाद करने वाला करार दिया है। पर्यावरणविदों का कहना है कि पर्यटन को बढ़ाने के नाम पर राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना के अन्तर्गत –

(1) फतहसागर झील के चारों ओर सड़क बनाना, मानव आबादी का विस्तार होना एवं जंगलों का घटना इस झील के लिए घातक साबित हुआ है।

(2) पक्षियों, वन्य जीवों और झील में पाए जाने वाले जीवों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं। यही आलम रहा तो इस नम झील का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा।

(3) मनुष्य के बढ़ते दखल के कारण झील पर पक्षियों की संख्या हजारों के मुकाबले सैकड़ों तक सिमट गई है। जीव–जन्तुओं के सुरक्षित आवास समाप्त हो गए हैं।

(4) नौकाओं व वाटर स्कूटर्स के कारण झील में मछलियों की प्रजातियाँ, पादप व जन्तु प्लवकों की संख्या घटी है।

(5) फतहसागर पर कृत्रिम विकास के कार्य नहीं बल्कि प्राकृतिक संरक्षण के कार्य ही पर्यटन के हित में होंगे। ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए फतहसागर के चारों ओर साइलेन्ट जोन घोषित किया जाना चाहिए। झील में मोटर बोट के संचालन पर रोक लगाकर केवल चप्पू वाली एवं सोलर, बेटरी ऊर्जा चालित नौकाएँ ही चलाई जानी चाहिए।

फतहसागर में सोलर ऑब्जर्वेट्री के पास स्थित प्राकृतिक टापू

फतहसागर में रानी रोड पर स्थित प्राकृतिक टापू

फतहसागर में रानी रोड वाले छोर पर नव विकसित कृत्रिम टापू

फतहसागर के पश्चिमी छोर पर अनेक प्रजातियों के पक्षियों का जमावड़ा

फतहसागर झील के पश्चिमी–दक्षिणी क्षेत्र स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों का पसंदीदा क्षेत्र रहा है। इस क्षेत्र के छिछले होने के साथ ही इसमें कुछ प्राकृतिक टापू भी विद्यमान हैं। इन प्राकृतिक टापुओं के साथ नगर विकास प्रन्यास ने हिन्दुस्तान जिंक के आर्थिक सहयोग से कुछ कृत्रिम टापू भी बनाये, जो एक सराहनीय कदम है। इनका स्वरूप प्राकृतिक टापू जैसा ही होता तो अति उत्तम रहता क्योंकि पक्षी प्रायः ऐसे टापू पर ही विचरण एवं प्रजनन करते हैं एवं अपने को सुरक्षित भी महसूस करते हैं। झील की भराव क्षमता से इनका सिरा ऊँचा है एवं पानी उतरने के साथ पर्याप्त ढ़लान से इन पक्षियों का विचरण एवं दाना–पानी सुगमता से उपलब्ध होता है। कृत्रिम टापू पर सघन वृक्षारोपण के साथ सूखे पेड़ भी गाड़े जावे। यह क्षेत्र नाव संचालन के साथ ध्वनि व प्रदूषण मुक्त घोषित हो। रानी रोड पर भारी वाहन निषेध के साथ चार एवं दो पहिया वाहन की रफ्तार भी धीमी रखी जावे जिससे प्रदूषण कम हो।

फतहसागर में रानी रोड वाले छोर पर स्थित संजय गार्डन एवं नेहरू पार्क के मध्य भाग का छिछला क्षेत्र : पक्षियों का पसन्दीदा एवं शांत स्थल, जहाँ अनेक कृत्रिम टापू प्राकृतिक टापुओं के तर्ज पर विकसित किये जा सकते हैं।

Indian cormorent

Ruddy shelduck

बड़ी तालाब : फतहसागर तंत्र के बड़ी तालाब में आम तौर पर पक्षी बहुत कम दिखाई देते हैं। वर्ष 2017 के दिसम्बर माह में रूडी शेलडक (ब्राह्मणी/सुर्खाब) का जोड़ा दिखना किसी आश्चर्य से कम नहीं था। बड़ी तालाब के पूरा भरने पर दिखने वाले एकमात्र टापू पर कोरमोरेंट पक्षियों के साथ इसको देखा गया। यह पक्षी मध्य एशिया एवं तिब्बती पठारों से सर्द प्रवास के दौरान भारत के विभिन्न जलाशयों पर आता है।

उदयपुर की झीलों में पक्षियों की संख्या में कमी के कारण : उदयपुर शहर की सीमा में स्थित पिछोला एवं फतहसागर झील तंत्र में पक्षियों की संख्या में लगातार कमी आने के अनेक कारण हैं, किन्तु सबसे बड़ा कारण मानवजनित है।

- सैलानियों की दिन प्रतिदिन बढ़ती संख्या व झीलों के आस–पास इनकी गतिविधियाँ पक्षियों को बहुत व्याकुल करती हैं।
- पक्षी सौम्य व शांत वातावरण में रहना पसंद करते हैं, अतः अधिक दर्शकों की उपस्थिति में ये स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं।
- झीलों के आसपास पक्की सड़क बनाने के कारण वाहनों का आना–जाना अधिक बढ़ गया है। वाहनों के शोर से पक्षियों को परेशानी होती है तथा कभी–कभी दुर्घटना भी हो जाती है।
- पक्की सड़क से झील में कच्चे रास्तों तथा खुले मैदान से होकर जल–स्रोतों के निकट तक जाना इन पक्षियों के आवास को नष्ट कर देता है।
- झीलों के निकट आने वाले दर्शक यत्र–तत्र खाने की वस्तुएँ व कचरा बिखेर कर चले जाते हैं जिससे वहाँ प्रदूषण फैलता है व पक्षियों तथा अन्य जानवरों में बीमारी फैलने का खतरा बढ़ जाता है।
- जल में संचालित मोटर युक्त नौकाओं की सवारी से हम मानव तो आनन्दित व उत्तेजित होते हैं किन्तु पक्षियों के लिए ये जल व ध्वनि प्रदूषण के कारण बनते हैं। इसीलिए ये पक्षी अपना आवास छोड़ अन्यत्र चले जाने को मजबूर हो जाते हैं।
- झीलों के आसपास मानव व मानव जनित क्रियाओं से पक्षियों के निजी जीवन में व्यवधान उत्पन्न होता है।
- अभी झीलों में मछलियाँ बहुतायत में नहीं हैं। इसलिए प्रवासी पक्षी गांवों के तालाबों का रूख कर रहे हैं, जहाँ काफी मात्रा में मछलियाँ मिलती हैं। इसके साथ ही झीलों में चलने वाली नावों, उससे होने वाले प्रदूषण, कपड़े धोने आदि के कारण भी बर्ड्स् को झीले रास नहीं आ रही हैं। यदि झीलों में पंछियों का प्रवास बढ़ाना है तो झीलों को प्रदूषण से बचाना होगा, तभी उपयुक्त वातावरण उपलब्ध हो सकेगा।

मेहमान पक्षी फतहसागर के बजाय पिछोला में ज्यादा दिखते हैं। जंगल सफारी व न्यून हलचल वाले स्थानों एवं प्राकृतिक टापुओं पर इन पक्षियों को देखा जा सकता है।

ऐसा न हो कि आज जो परिदृश्य हम देख रहे हैं, जिन सुन्दर, स्थानीय एव प्रवासी पक्षियों को देखकर न केवल हमारा मनोरंजन होता है अपितु हमारे मन को भी तनाव से मुक्ति मिलती है। ये पक्षी पारिस्थितिकी तंत्र की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है और इनसे हमें अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ होते हैं। हमारी आने वाली पीढ़ियाँ उससे वंचित न रह जाये, इसलिए आईए, हम सब मिलकर प्रकृति व जीवों के संरक्षण का प्रण ले एवं उसी के अनुरूप अपने कृत्य करें।

उदयपुर की सीमा में नम भूमियाँ : उदयपुर शहर की वृहद् सीमा में पिछोला एवं फतहसागर तंत्र के अतिरिक्त आयड़ नदी एवं उदयसागर नम भूमि के रूप में स्थित है। यहाँ भी स्थानीय एवं प्रवासी पक्षी बहुत कम समय लेकिन पर्याप्त संख्या में प्रवास करते हैं।

आयड़ नदी : आयड़ नदी वर्ष में कुछ ही दिन वर्षा जल से बहती है। शेष वर्ष में शहर के अपशिष्ट जल से नम बनी रहती है। इसे नम भूमि विकास कार्यक्रम में सम्मिलित कर प्रदूषण निवारक वनस्पतियों से समृद्ध किया जाना चाहिये। शहर के जल–मल के शोधन संयंत्र लगाकर इसके बदबूदार स्वरूप को हटा कर मनमोहक हरीतिमा विकसित की जा सकती है। आयड़ के दोनों ओर एक निश्चित दूरी पर अशुद्ध जल (सीवरेज) की उपलब्ध मात्रा के अनुसार जल शुद्धीकरण यंत्र लगाकर आयड़ नदी में शुद्ध पानी को पुनः डाला जाना चाहिये, जिससे आयड़ नदी वर्ष भर भरी हुई रहने के साथ बहती भी रहे तथा इसे सुन्दर नम भूमि के रूप में विकसित की जाये। इसे देशी एवं प्रवासी पक्षियों के उत्तम स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

उदयसागर : आयड़ नदी इसके उद्गम स्थल से उदयपुर शहर के मध्य बहती हुई वर्षाकाल में शुद्ध एवं बाकी समय में उदयपुर शहर के अशुद्ध जल–मल के साथ उदयसागर झील में समाहित होती है। अतः उदयसागर झील का जल अत्यधिक प्रदूषित होने के कारण यह पेयजल के रूप में उपयोग में नहीं लिया जाता है। स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों का यहाँ पर पर्याप्त संख्या में जमावड़ा देखने को मिलता है। झील के प्रदूषण स्तर में कमी आने पर यहाँ पर पक्षियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि संभव होगी क्योंकि यह झील एक शांत क्षेत्र होने के साथ कृषि भूमि से घिरी हुई है, जो पक्षियों के ठहराव के लिए अधिक उपयुक्त है।

उदयसागर मेहमान एवं देशी परिन्दों की अठखेलियों से आबाद

उदयपुर की निकटवर्ती नम भूमियाँ प्रवासी पक्षियों को अधिक रास आई : उदयपुर की निकटवर्ती नम भूमियाँ झील, छोटे तालाब और पोखरों के रूप में विद्यमान हैं। यहां पर सिंघाड़े की खेती, कमल उत्पादन के अतिरिक्त जल जीवों और प्रवासी पक्षियों का भारी जमावड़ा रहता है। प्रवासी पक्षी प्रायः अक्टूबर से मार्च की अवधि में विश्व के दूरस्थ स्थानों से आकर यहाँ पर प्रजनन और जल क्रीड़ा करते हैं। इनको ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र एवं आबोहवा अधिक पसन्द आ रही है। गांवों में अधिक हरियाली और उथले तालाब होते हैं। इसके साथ ही वहां उथले क्षेत्र में जलीय वनस्पति की उपलब्धता भी अधिक रहती है। साथ ही आस–पास खेत होने से भी पक्षियों को भोजन आसानी से मिल जाता है। गांवों में तालाबों के पास वाहनों का शोरगुल व लोगों की चहल–पहल बहुत कम होने से शांत वातावरण भी पक्षियों को ज्यादा अच्छा लगता है जिससे वे यहाँ डेरा डाले रहते हैं। गांवों में पक्षी मित्रों की संख्या भी अधिक होती है।

उदयपुर से 60 कि.मी. वृत में मेनार के ढंड व ब्रह्म तालाब, घासा का गन्धर्व तालाब, आमलिया, भटेवर, रोहणिया, वल्लभनगर, राठौड़ों की तलाई, छोटा व बड़ा बाठेड़ा, मंगलवाड़ के पास नगावली, भीण्डर के पास बड़वई, पुरोहित जी का तालाब, खेरोदा, कैलाशपुरी का बाघेला तालाब, नाल साण्डोल एनीकट, झाड़ोल बाँध, वेलनिया बाँध, नागमाल बाँध, जाड़ा पीपला बाँध, बाघदड़ा झील, खेमली, करणपुर, फुलवारी की नाल आदि ऐसे स्थल हैं, जहां पर विपुल संख्या में स्थानीय और प्रवासी पक्षी अपना डेरा डालते हैं। यहां के तालाबों में गूंजता कलरव इन्टरनेट के पंखों पर सवार होकर संपूर्ण विश्व में पहुंच चुका है। पंछियों के लिए मुफीद पर्यावरण, स्थानीय ग्रामीणों का सुरक्षा कवच एवं संरक्षण, इन स्थानों को प्राकृतिक पक्षी विहार के रूप में विकसित कर रहा है। वर्ष 2014 से 2020 के विश्व नम भूमि दिवस के अवसर पर राजस्थान वन एवं पर्यावरण विभाग तथा जन सहयोग से विविध जलाशयों में उपस्थित पक्षी प्रजातियों की संख्या की गणना में आशातीत वृद्धि हुई हैं।

उदयपुर के अतिरिक्त राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, डूंगरपुर, बांसवाड़ा एवं पाली के छोटे–बड़े तालाबों में भी प्रवासी पक्षी काफी संख्या में विचरण करते हुए देखे जा सकते हैं।

- शहर में अभी पक्षियों की 30 तरह की प्रजातियों का डेरा है। ● फतहसागर में तो इनका आना लगभग बन्द हो चुका है लेकिन पिछोला के कुछ क्षेत्रों में इनका कलरव सुना जा सकता है। ● झीलों से जलकुम्भी के साथ–साथ डूबी हुई घास की सफाई कर दिए जाने से प्रवासी पक्षी नहीं आते हैं। ● डूबी हुई घास में सैकड़ों प्रजातियों के कीट होते हैं, जो इनका भोजन है। ● पहले की तुलना में फतहसागर व पिछोला झील में आने वाली कई पक्षियों की प्रजातियों के नहीं आने का कारण झीलों में बढ़ती मानवीय हलचल व प्रदूषण है।

– पक्षीविद् श्री रजा तहसीन

पक्षियों की फोटोग्राफी के दौरान कई बातों की पालना करनी चाहिये –
- अच्छी फोटोग्राफी के लिए पक्षी परेशान नहीं हो, छेड़े नहीं।
- पक्षी अपने आवास में हो और जैविक क्रिया कर रहा हो, तब उसकी फोटो लेंगे तो सही मायने में अच्छी फोटोग्राफी होगी।

– श्री असद रहमानी, पूर्व निदेशक, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी

घटते जलीय पक्षी एवं हमारा दायित्व : अरावली की सुरम्य पहाड़ियों के मध्य स्थित उदयपुर शहर मानो झीलों की एक माला–सी पहने हुए अत्यन्त ही सुन्दर दृश्यावलियों से सुसज्जित शहर है। इस शहर के मध्य स्थित पिछोला, फतहसागर व स्वरूपसागर झीलें इसकी जान है। शहर से कुछ ही दूरी पर स्थित बाघदड़ा, बड़ी, गोवर्द्धन सागर, रूपसागर, उदयसागर आदि झीलें मानव मन को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती हैं। केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु इन झीलों से तरह–तरह के पक्षी भी विशेषकर प्रवासी पक्षी आकर्षित हो जाते हैं तथा शीतकालीन निवास करते हैं। उदयपुर की झीलों व इनके आसपास के क्षेत्रों में कुछ पक्षी सदैव यहीं निवास करते हैं, जैसे – सारस, पेलिकन, पेन्टेड स्टॉर्क, पौंड हेरान, ब्लैक आइबिस आदि। कुछ प्रवासी पक्षी सुदूर ठण्डे प्रदेश से यहाँ अनुकूल वातावरण में आकर प्रवास करते हैं। यहाँ आने वाले कुछ प्रवासी पक्षी है – फ्लेमिंगो, सुर्खाब, पोचार्ड, बार–हेडेड गून आदि।

इन देशी एवं प्रवासी पक्षियों को देखकर न केवल हमारा मनोरंजन होता है अपितु हमारे मन को भी तनाव से मुक्ति मिलती है। पक्षी पारिस्थितिकी तंत्र की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। पक्षियों से हमें अनेक प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष लाभ होते हैं। इन पक्षियों को शायद यहाँ का सुरम्य व सुरक्षित वातवारण अनुकूल लगता है, तभी ये बड़ी संख्या में यहाँ आते हैं। उदयपुर जिले के समीपवर्ती अनेक गाँवों जैसे–मेनार, मंगलवाड़, वल्लभनगर, नागावली, भटेवर के जलाशयों में भरपूर मात्रा में जलीय पक्षी वर्षभर पाए जाते हैं। प्रवासी पक्षियों का भी वहाँ डेरा लगा रहता है। ग्रामीण भी पक्षियों की सुरक्षा को लेकर सजग दिखते हैं किन्तु पिछले कुछ वर्षों में पक्षियों की संख्या प्रतिवर्ष कम हो रही है। पिछोला झील के एक छोर पर ही कभी–कभार पक्षियों का छोटा झुण्ड दिखाई देता है। फतहसागर में तो पक्षी यदा–कदा ही नज़र आते हैं।

– डॉ. छाया भटनागर, प्राणि विज्ञान विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

झीलों में नो बोटिंग, नो फिशिंग, नो ट्यूरिज्म जोन : फतहसागर व पिछोला झीलों के एक भाग में नो बोटिंग, नो फिशिंग, नो ट्यूरिज्म जोन बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए पिछोला में रिंग रोड एवं फतहसागर में रानी रोड छोर को चयनित किया जा सकता है। इससे मेहमान पंछियों को व्यवधान कम होगा, इस क्षेत्र में अधिक प्रवासी पक्षी भविष्य में आने लगेंगे। इसके साथ निर्धारित जोन में प्रदूषण रोकना, खरपतवार निकालना व शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करना आवश्यक है। पर्यटक पक्षियों के नजदीक जाने के प्रयास न करें तथा इनकी सुन्दरता एवं गूँजता कलरव दूर से ही निहारें एवं सुनें।

– पक्षीविज्ञ

यूरोप, साइबेरिया, एशिया, मंगोलिया, तंजानिया एवं रूस से मेनार के ढंड एवं ब्रह्म तालाब में आते हैं हजारों मेहमान परिंदे

मेनार के ढंड व ब्रह्म तालाब को 'पखेरूओं का घर'' कहा जा सकता है। यहाँ वर्षभर इनका डेरा लगा रहता है। प्रवासी के अलावा यहाँ स्थानीय पक्षी भी डेरा डालते हैं। यहाँ के ब्राह्मण समाज के लोगों ने पखेरूओं को सुरक्षित ठिकाना देने के लिए इन दोनों तालाबों को पूरी तरह से सुरक्षित रखा है। इन तालाबों का पानी तक किसी कार्य में उपयोग में नहीं लिया जाता है।

ब्रह्म तालाब के किनारे स्थित भगवान शिव की प्रतिमा

मेवाड़ क्षेत्र वो इकोटोन है जहाँ रेगिस्तान व अरावली की पहाड़ियों से मिलने वाले दोनों प्रजातियों के पक्षी मिलते हैं। इसके अलावा अब बाहरी पक्षी भी यहाँ आवास बनाने लगे हैं। यहाँ पर उन्हें पर्याप्त भोजन, आवास और सुरक्षा मिलती है।

ढंड तालाब

ब्रह्म तालाब

सारस क्रेन (कोंच)

मेनार के ढंड एवं ब्रह्म तालाब में सारस क्रेन पक्षी की आवाज हवा को चीरती हुई दूर तक सुनाई पड़ती है। साथ ही अनेक प्रजातियों के सैंकड़ों परिन्दों की चहचहाहट, चिड़ियाओं का कलरव और गूँज बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर मन को सुकून प्रदान करती है।

मेनार तालाब (बर्ड विलेज) : उदयपुर जिला मुख्यालय से करीब 45 कि.मी. की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग 76 पर स्थित मेनार गाँव दो खूबसूरत जलाशयों ढंड तालाब एवं ब्रह्म तालाब के मध्य प्रकृति की गोद में बसा हुआ है। इसकी शांत एवं सुकून भरी आबोहवा हजारों कि.मी. दूर से आने वाले प्रवासी पक्षियों को पनाह देती है। इसी कारण इसे बर्ड विलेज के नाम से भी जाना जाता है। ये दोनों तालाब केवल परिन्दों के लिए आरक्षित हैं। इन तालाबों में करीब 150 स्थानीय एवं प्रवासी प्रजातियों के हजारों पक्षियों का वर्षभर या किसी विशेष समय पर शरण–स्थली के रूप में प्रसिद्ध है। पिछले कुछ वर्षों से मेनार प्रवासी पक्षियों के साथ स्थानीय पक्षियों के आवास तथा प्रजनन के लिए भी आकर्षण का मुख्य केन्द्र बना हुआ है। ब्रह्म तालाब के किनारे पर भगवान शिव की विशाल मूर्ति स्थापित है, जो दूर से ही दिखाई पड़ती है। तालाब के किनारे पर आम के सघन वृक्ष विकसित हैं जिनकी टहनियों पर चमगादड़ों की बस्तियाँ हैं। शाम को चमगादड़ों के पानी पीने की क्रिया बहुत ही मनमोहक होती है। गाँव के ढंड तालाब में प्रवासी पक्षियों की संख्या अधिक रहती है। प्रवासी पक्षियों का आगमन अक्टूबर माह में प्रारम्भ होता है जो नवम्बर तक जारी रहता है। फरवरी में ये पुनः लौटना शुरू करते हैं और मार्च के अंतिम दिनों तक सभी लौट जाते हैं। तालाब में मत्स्याखेट नहीं होने से इन्हें भरपूर भोजन मिलता है, वहीं घास की पत्तियाँ खाने वाले परिन्दे आस–पास के खेतों में विचरण करते हैं। कुछ पक्षी दिनभर 35 हजार फीट ऊँची उड़ान भरते हैं और रात्रि में भोजन–पानी के लिए यहाँ ठहरते हैं।

– पक्षीविद् श्री विनय दवे

परिंदों को ऊर्जा भरी उड़ान दे रही है, सकारात्मक सोच का संदेश : इंसान ही नहीं धरती पर रहने वाले तमाम जीव सामाजिक वातावरण बनाकर जीवन जीते हैं। एक साथ रहते हैं, खाते हैं, जीवन-यापन करते हैं। चाहे धरती पर हो या नभ में। जिन्दगी का ये सिलसिला यूँ ही अनवरत चलता रहता है। परिंदों की ये ऊर्जा भरी उड़ान हमें कुछ कह रही है। निरन्तर सकारात्मक सोच और संघर्ष से लड़ते रहने का संदेश दे रही है। बर्ड विलेज मेनार के तालाब से परवाज़ भरते क्रेन (सारस)।

प्रेम और समर्पण का प्रतीक है –'सारस क्रेन'

सारस विश्व में उड़ने वाला सबसे बड़ा अप्रवासी भारतीय पक्षी है। सारस युगल अपने जोड़े के प्रति समर्पित होते हैं। ये जीवन में एक बार ही जोड़ा बनाते हैं। नर व मादा पक्षी में अन्तर करना मुश्किल होता है क्योंकि दोनों समरूप होते हैं। इसकी लम्बाई 1.50 से 1.75 मीटर तक होती है। इसका रंग ग्रे तथा टांगे और सिर लाल रंग के होते हैं। सामान्यतः यह जोड़ों में ही दिखाई देते हैं। प्रजनन काल में ये एक–दूसरे को रिझाने के लिए बड़ा ही मनमोहक नृत्य करते हैं। इनकी आवाज को कई दूर आबादी इलाकों तक आसानी से सुना जा सकता है। इनका मुख्य भोजन दाने–पानी में मिलने वाले फल, कीड़े–मकोड़े आदि हैं। इस पक्षी का रामायण में भी उल्लेख मिलता है।

प्रवासी पक्षी : माइग्रेटरी बड्र्स (प्रवासी पक्षी) उत्तरी ध्रुव के पक्षी हैं, ये मंगोलिया, साइबेरिया, चाइना, रूस, यूरोपीय देशों के साथ हिमालय के तराई क्षेत्रों आदि से आते हैं। वहाँ सर्दियों में पानी जम जाता है। इसलिए वे ऐसी जगहों को तलाशते हैं जहां पानी का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो और बहता जल मिले। उदयपुर संभाग में मौसम के रूख में बदलाव आते ही प्रवासी पक्षियों के आने का सिलसिला शुरू हो जाता है। झीलों में पक्षियों के कलरव गूँजने लगते हैं। ये पक्षी शहर की झीलों के साथ ही आसपास के गांवों में भी जलाशयों पर अच्छी संख्या में पहुँचते हैं। ऐसे में वे यहाँ आ जाते हैं। हमारे यहाँ जब तक सर्दी पड़ती है तब तक वे यहाँ रुकते हैं। सर्दी की समयावधि कम होने पर वे जल्दी यहां से चले जाते हैं।

इन तालाबों के मुख्य आकर्षण ग्रेट क्रिस्टेड ग्रेब है, जो देशान्तर से यहाँ आती है। इन्हें यहाँ का पारिस्थितिकी तंत्र इतना पसन्द आता है कि यहीं प्रजनन करने लगते हैं। इन्हें आसानी से दोनों तालाबों पर देखा जा सकता है। काले लम्बे पंख वाला, दुर्लभ 40 सेमी लम्बा पंछी इण्डियन स्कीमर (पनचीरा) यहाँ दिखायी देता है। इसके अतिरिक्त फ्लेमिंगो, रोजी पेलीकन, लिटल ग्रेब, परपल मूर हेन, कॉमन मूरहेन, गीज कॉमन क्रेन बर्ड देखे गये। इतनी अच्छी संख्या में विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों को देखकर बोम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के निदेशक डॉ. असद आर. रहमानी ने जनवरी, 2014 में इसे अच्छे जलाशय की पहचान बताई। समय के साथ गांव वालों के सहयोग से जो न तो किसी को शिकार करने देते और न ही किसी को मछली पकड़ने देते हैं। इन जलाशयों को राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है।

गाँव में तालाब का निर्माण इस प्रकार हुआ है कि कहीं गहरा तथा कहीं छिछला है जो आदर्श जलीय पारिस्थितिकी का निर्माण करता है। तालाब के किनारे घाट बने हुए हैं जिनसे पक्षियों की गतिविधियों को बाधित किये बिना इनका अवलोकन किया जा सकता है। ढंड तालाब गाँव की निचली सतह पर निर्मित है। इस कारण गाँव का प्रदूषित व गंदा पानी नियमित रूप से बहता रहता है। गाँव के पक्षी–प्रेमी, पंचायत, स्थानीय प्रशासन, राज्य के वन विभाग को इस ओर ध्यान देना चाहिये तथा इसे प्रदूषण मुक्त बनाना चाहिये। तालाब का पानी सिंचाई के काम में भी नहीं लिया जाता बल्कि वह पशु–पक्षियों एवं पालतू पशुओं के लिए सुरक्षित रखा जाता है। गांव वाले पौधारोपण कर श्रमदान से विलायती बबूल को उखाड़ कर हटा देते हैं। डॉ. रहमानी ने इन जलाशयों के एक संकुल के रूप में ''इम्पोरटेन्ट बर्ड एरिया'' घोषित करने की बात कही ताकि इन जलाशयों को संरक्षण के साथ–साथ पर्यटन नक्शे पर भी स्थान दिलाया जा सकें। उन्होंने सुझाव दिया कि इन जलाशयों को ''कम्यूनिटी कन्जरवेशन रिजर्व'' भी घोषित किया जा सकता है। इसी क्रम में विश्व प्रकृति निधि के डॉ. अभिषेक ने इस स्थलों की तारीफ करते हुए यहाँ पर 'ईको ट्यूरिज्म' विकास की अनुशंषा की। आयरलैण्ड के पक्षी प्रेमी पेट्रिकुलेन प्रतिवर्ष मेनार में इन पक्षियों को निहारने के लिए दिसम्बर–जनवरी महीने में उदयपुर आते रहते हैं।

ढंड तालाब में डेरा डाले हजारों पक्षियों की मनोहारी अठखेलियाँ

''मेनार के दोनों जलाशय वहाँ के ग्रामीणों की जागरूकता की वजह से बचे हुए हैं। यहाँ ढंड तालाब एवं ब्रह्म सागर तालाब पर करीब 150 से अधिक प्रजातियों के पक्षी प्रवास के लिए आते हैं। ग्रामीणों ने इनका संरक्षण कर रखा हैं गांव वाले बचाते आए हैं और बचाते रहेंगे। ग्रामीणों को यह ध्यान रखना होगा कि इसका जो जल क्षेत्र है,वह कभी कम ना हो। हम सभी को यहाँ के परिवेश से सीखना चाहिये। मेनार को एक आदर्श वेटलैंड बनाकर दूसरे गाँव के लोगों को प्रेरित करना चाहिये।''

– असद आर. रहमानी,
पूर्व निदेशक,
बी.एन.एच.एस.एस., मुम्बई

''मेनार के दोनों जलाशय आदर्श वेटलैंड है। ये परिन्दों के लिए आदर्श आश्रय स्थली है। ग्रामीणों ने जिस प्रकार से इनका संरक्षण किया है ये प्रेरणास्पद है। आज मेनार गांव देश–विदेश में प्रसिद्ध हो चुका है। इसकी प्रसिद्धि देखकर आसपास के गाँवों के लोग भी प्रेरणा लेंगे एवं निश्चित जलाशयों का संरक्षण करेंगे।''

– डॉ. सतीश शर्मा,
पक्षीविद् व वन्य जीव विशेषज्ञ,
उदयपुर

मेनार के जलाशय

इन तालाबों में नावें चलाना तो दूर गांव के लोग इन तालाबों के पानी का उपयोग सिंचाई के लिए भी नहीं करते, ताकि लोगों के आवागमन के कारण कहीं पंछियों को परेशानी न हो। इन तालाबों पर मछली पकड़ने का ठेका भी नहीं दिया जाता है तथा शिकार पर पूर्ण पाबन्दी है। आसपास न वाहनों का शोर है और न कोई अन्य व्यवधान। ऐसे में शांत और सुकून भरे वातवारण के कारण पंछियों ने कई वर्षों से इन तालाबों को अपना बसेरा बना रखा है। मेहमान परिन्दों के लिए ये तालाब मानो हॉलीडे डेस्टिनेशन की तरह हैं।

– पक्षी मित्र, मेनार

घासा का तालाब (गन्धर्व सागर) : उदयपुर के निकट मावली तहसील में पंचायत मांगथला का गन्धर्व सागर, प्रवासी पक्षियों के नये ठिकाने का रूप ले रहा है। माना जाता है कि इसका निर्माण राजा गंधर्वसेन ने करवाया था। अरावली पहाड़ियों की तलहटी के पूर्वी छोर पर नेशनल हाईवे–8 के पास मांगथला, माणकावास, बिलोता, रटठूजणा और मजेरा

शेलडक (Shelduck)

कॉमन पोचार्ड (Common pochard)

व्हाइट आइबिस (White ibis)

फेरूजिनस पोचार्ड (Ferruginous pochard)

ग्लॉसी आईबिस (Glossy ibis)

गांवों के बीच 1700 बीघा क्षेत्र में फैले इस तालाब की जलग्रहण क्षमता 2000 लाख घनफुट है। इस तालाब की गहराई 13 फीट है और वर्ष 2013–14 में पहली बार कई प्रवासी पक्षी यहां देखे गये। तालाब से देलवाड़ा के विश्व विख्यात देवीगढ़ होटल का खूबसूरत नजारा दिखायी देता है एवं तालाब भी इस पैलेस से साफ नजर आता है। मावली तहसील का सबसे बड़ा तालाब अतिक्रमण से ग्रस्त है और राजस्थान हाईकोर्ट के आदेश के उपरान्त भी झील में गैर कानूनी ढंग से ट्यूबवेल खुदे हुए हैं। शैल डक, कॉमन पोचार्ड, फेरूजिनम पोचार्ड, ग्लॉसी आईबिस, व्हाइट आईबिस, ब्लेक आइबिस, ग्रे हेरोन, परपल हेरोन, इग्रेट आदि प्रजातियों के पक्षी यहाँ एवं मंगलवाड़, नगावली में भी देखे गये।

इस तालाब की पाल जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। इसकी मरम्मत करने के साथ राजस्व अभिलेख के अनुसार इसकी सीमा निर्धारण कर पत्थरगढ़ी द्वारा एक सीमा तक अतिक्रमण से मुक्त करने का प्रयास स्थानीय प्रशासन द्वारा किया जाना चाहिये। इसकी पाल की मरम्मत एवं गहराई में वृद्धि मनरेगा के अन्तर्गत करवायी जा सकती है। ग्रामीणों के सहयोग से इस तालाब को भी स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों का आश्रय स्थल बनाकर इसे 'बर्ड विलेज' का दर्जा दिलाया जा सकता है।

ब्लेक आइबिस (Black ibis)

ग्रे हेरोन (Grey heron)

परपल हेरोन (Purple heron)

इग्रेट (Egret)

गन्धर्व तालाब – विशाल जल सतह

जीर्ण–शीर्ण पाल : मरम्मत आवश्यक

हिमालय क्षेत्र के पक्षी मेवाड़ क्षेत्र में आने लगे हैं और यहीं पर नेस्टिंग करने लगे हैं, जो अपने आप में बड़ी बात है। इसका कारण यह है कि यहाँ पर जैव विविधता बढ़ने के साथ उन्हें पर्याप्त भोजन, आवास एवं सुरक्षा मिल रही है।

बड़वाई तालाब : उदयपुर–कानोड़ मार्ग पर स्थित बड़वाई चित्तौड़गढ़ जिले की डूंगला तहसील का गाँव है जो उदयपुर से करीब 80 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। बड़वाई का तालाब पक्षियों के लिए स्वर्ग है। इस तालाब में गाँव के गंदे नालों का पानी नहीं गिरता है जिससे यह प्रदूषण मुक्त है और ग्रामीणों की आस्था ने भी इस तालाब को निर्मल बनाने में गांव का नाम गौरवान्वित किया है। प्रवासी पक्षियों के लिए यह गांव और उसका तालाब बहुत सुरक्षित जगह है। तालाब की पाल कच्ची तथा पक्की दोनों ही तरह की है। बड़वाई तालाब पर मूरहेन, स्पून बिल, ऑपन बिल स्टॉर्क, फ्लेमिंगो, कॉमन पॉचार्ड, वाइट पेलिकन, ब्लेक आईबिज, वूड सैण्डपाइवर, गोडविट, ब्राह्मणी एवं डक आदि विभिन्न प्रजातियों के पक्षी देखे जा सकते हैं।

बड़वाई तालाब एवं उसमें विचरण करते पक्षियों का जीवन्त दृश्य

किशन करेरी तालाब : चित्तौड़गढ़ जिले की डूंगला तहसील में उदयपुर से करीब 84 कि.मी. दूर स्थित किशन करेरी में स्थित तालाब की पाल करीब–करीब कच्ची हैं परन्तु किसी जगह पर पक्की भी बनी हैं। किशन करेरी को लेकर ऐसी मान्यता है कि इसी तालाब से भगवान द्वारकाधीश की मूर्ति निकाली गयी थी। मूर्ति को भव्य मंदिर में स्थापित किया गया और इस गाँव का नामकरण किशन करेरी भी इसी आस्था के चलते रखा गया। इस तालाब पर कई प्रजातियों के कछुए भी देखे जा सकते हैं। यहाँ रूडि, शैल डक, ग्रे लेग गूज, बार डेडेड गूज, सारस क्रेन, पेन्टेड स्टॉर्क, स्पूनबिल, ग्रेहेरोन, परपल हैरोन आदि विभिन्न प्रजातियों के पक्षी यहाँ देखे जा सकते हैं। यहाँ पक्षी मित्रों द्वारा दो टापुओं का निर्माण करवाया गया है। साथ ही सघन पौधारोपण कर नियमित देखभाल पक्षी मित्रों द्वारा की जा रही है। इस तालाब की पाल को पक्की बनाकर इसे अतिक्रमण मुक्त रखा जाना चाहिये।

किशन करेरी तालाब में पक्षी मित्रों द्वारा निर्मित टापुओं पर पक्षियों का कलरव

पक्षी मित्रों द्वारा कृत्रिम टापू का निर्माण

बाघदड़ा झील : पूर्व में राजा–महाराजाओं की शिकारगाह रही बाघदड़ा झील आज प्रकृति प्रेमियों के लिए शानदार टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन कर उभर रही है। शहर से 20 कि.मी. दूर उदयपुर–झामर कोटड़ा मार्ग पर स्थित यह झील अपने अन्दर प्राकतिक सौन्दर्य की छटा समेटे हुए हैं। 342 हेक्टेयर में फैले हुए झील एवं अभयारण्य को मगरमच्छों का गढ़ कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ पर अभी करीब 40 मगरमच्छ हैं। इसके साथ यहाँ पर नीलगाय, कछुए, जंगली बिल्ली और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों से रूबरू होने का अवसर भी मिलता है। उदयपुर में जुगनुओं की टिमटिमाहट भले ही खत्म हो गई हो, लेकिन यहाँ टिम–टिम करते हुए जुगनुओं की रोशनी तारों के बीच होने का अहसास दिलाती है, वहीं राजा–महाराजाओं के समय से मौजूद ऐतिहासिक ओदियाँ देखने का भी अवसर प्रदान करती हैं। इस नेचर पार्क पर बना डेम एक पिकनिक स्पॉट रहा है। डे ट्रेकिंग की सुविधा व्यू पॉइन्ट के साथ उपलब्ध है।

रस्टी स्पॉटेड कैट
(Rusty-Spotted Cat)

क्रॉकोडाइल (मगरमच्छ)
Crocodylinae

दुनिया की सबसे छोटी बिल्ली जो भारत के अलावा केवल श्रीलंका में पाई जाती है, उदयपुर के आसपास इसे बाघदड़ा के अतिरिक्त फतहसागर, सज्जनगढ़, केवडे की नाल में देखा जा सकता है। इसे भी संरक्षित किये जाने की आवश्यकता है। बाघदड़ा झील को मगरमच्छ अभयारण्य के रूप में पर्यटक मानचित्र पर दर्शाया जाना चाहिये। झील में मगरमच्छ को दिखाने के लिए विशेष एवं पूर्ण सुरक्षित दर्शक दीर्घा बनायी जानी चाहिये। स्वरूपसागर एवं मदार छोटे तालाब में देखे गये मगरमच्छों को भी बाघदड़ा झील में स्थानान्तरित कर इन दोनों झीलों को अधिक सुरक्षित किये जाने के प्रयास किये जाने चाहिये।

बड़ी संख्या में मगरमच्छों के आवास वाले बाघदड़ा नेचर पार्क के प्राकृतिक आवास में अब चीतल भी मौजूद है। इसमें चीतलों को प्राकृतिक आवास में छोड़कर इसे मृगवन के रूप में विकसित किया जा रहा है। केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण की ओर से स्वीकृति उपरान्त चीतलों को बाघदड़ा नेचर पार्क में छोड़ा गया है। पूर्व में यहां चिंकारा, चौसिंगा व सांभर आदि शाकाहारी वन्य जीव पाए जाते थे। वन विभाग सज्जनगढ़ अभयारण्य, बायोलॉजिकल पार्क, जंगल सफारी पार्क, बड़ी पाल व जैव विविधता पार्क के बाद अब बाघदड़ा नेचर पार्क तक पर्यटक व शहरवासियों को आकर्षित करने के लिए इसे विकसित किया जाना चाहिये। बाघदड़ा जलाशय के नीचे की तरफ नाल में जामुन, खजूर, बरगद, गूलर आदि सदाबहार वृक्षों की बहुतायत है। यहां कई तरह की फर्न देखने को मिलती है। इस नाल के खड़े तटों पर दुर्लभ वृक्षों के झुरमुट देखने योग्य है। इस पार्क में गुग्गल जैसी रेड डाटा वृक्ष की प्रजातियाँ देखने को मिलती है। इसमें सघन वन से लेकर कंटीले वन एवं घास के मैदान के ईको–सिस्टम उपलब्ध है। यहां कड़ाया, उरीठा, गुग्गल, जंगली जीनिया, सांभरबेल जैसे दुर्लभ पौधे भी मिलते हैं।

बाघदड़ा झील : प्रकृति की गोद में

फॉरेस्ट बर्ड्स : फॉरेस्ट बर्ड्स भी प्रतिवर्ष केवडे की नाल, बाघदड़ा नेचर पार्क, सज्जनगढ़ वाइल्ड लाइफ सेन्चुरी व वन विभाग की नर्सरियों में देखें जा सकते हैं। इनमें ब्लू रॉक थ्रश, रेड थ्रोटेड, फ्लाईकेचर, वरडिटेर फ्लाईकेचर, ब्लू थ्रॉट, कॉमन स्टोनचेट आदि शामिल हैं।

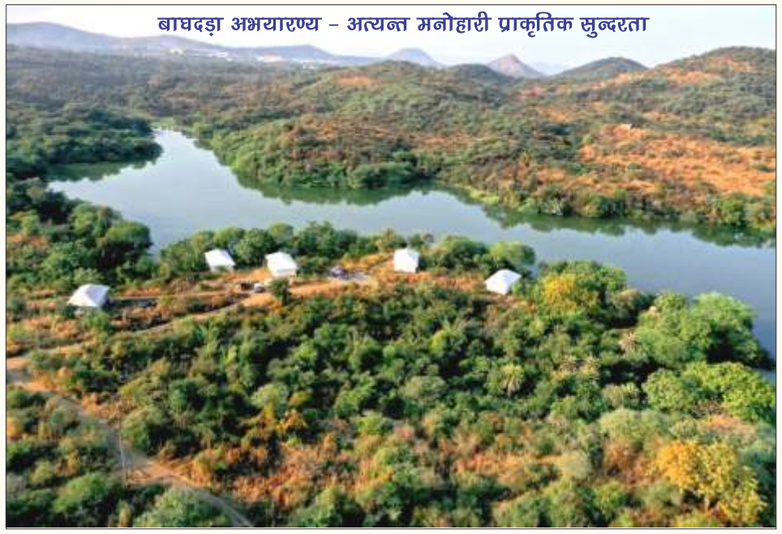
बाघदड़ा अभयारण्य – अत्यन्त मनोहारी प्राकृतिक सुन्दरता

झाड़ोल तालाब : यह तालाब उदयपुर शहर से करीब 50 कि.मी. की दूरी पर पूर्णतया प्राकृतिक सौन्दर्य के मध्य स्थित है। यहाँ पर स्थानीय एवं प्रवासी पक्षी अपना डेरा डाले देखे जा सकते हैं। यह तालाब मानसी नदी के प्रवाह क्षेत्र में स्थित है। इसके रास्ते में सांडोल की नाल एक दर्शनीय स्थल के रूप में प्रसिद्ध है, जहाँ उदयपुर शहर एवं आसपास क्षेत्र से लोग वर्षाकाल में पिकनिक मनाने के लिए भ्रमण पर आते हैं। इस नाल में बड़ी एवं ऊँची पहाड़ियों के मध्य कल–कल बहता बहता पानी एवं पक्षियों के चहकने की गूँज स्वतः ही हर किसी का मन मोह लेती है। यहाँ बड़े–बड़े एवं घने छायादार वृक्षों से यह क्षेत्र पूर्णतया आच्छादित है। इस नाल में जामुन एवं सीताफल के पौधे बहुतायत में हैं। जंगली जीवों में बन्दर, चीते आदि विचरण करते अक्सर देखें जाते हैं। वन विभाग द्वारा यहाँ पर एक सुन्दर नर्सरी भी विकसित की गई है, जिसमें यात्रियों के रात्रिकालीन ठहरने की व्यवस्था भी है। साथ ही संपूर्ण नाल में सुन्दर नदी एवं एक एनिकट पर झरना भी मनोहरी दृश्य प्रस्तुत करता है। इस तालाब की पाल के पास सफारी रिसोर्ट स्थित है, जहाँ पर देशी एवं विदेशी पर्यटक ठहरते हैं।

झाड़ोल तालाब पर स्थित सफारी रिसोर्ट

झाड़ोल तालाब : पूर्णतया प्राकृतिक परिवेश में विशाल जलराशि का सुन्दर दृश्य

साण्डोल की नाल के एनिकट के नीचे वन विभाग द्वारा विकसित छोटी तलैया, एडवेन्चर पॉइन्ट एवं जीप लाईन

साण्डोल की नाल के एनिकट पर वर्षाऋतु के दौरान बहता झरना

गेब सागर : उदयपुर संभाग के डूंगरपुर जिले की प्रमुख झील गेब सागर में भारतीय, स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के कलरव का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है। राजस्थान के यूनिसेफ प्रमुख श्री सेमयुल मनुगा मिज गेप सागर के किनारे बने उदय विलास महल से पक्षियों के नजारे देखकर पंछियों के प्रेम से अभिभूत हो गये। पंछी प्रेमी श्री सत्यप्रकाश मेहरा और डॉ. सरिता मेहरा ने वागड़ क्षेत्र की पक्षी विविधता को एक अपूर्व खजाने की संज्ञा दी है, इन अन्वेषकों ने 226 प्रजातियों की इस क्षेत्र में उपस्थिति प्रमाणित की है।

गेब सागर – अद्वितीय विकसित स्वरूप

गेब सागर में विभिन्न प्रजातियों के पक्षी समूह

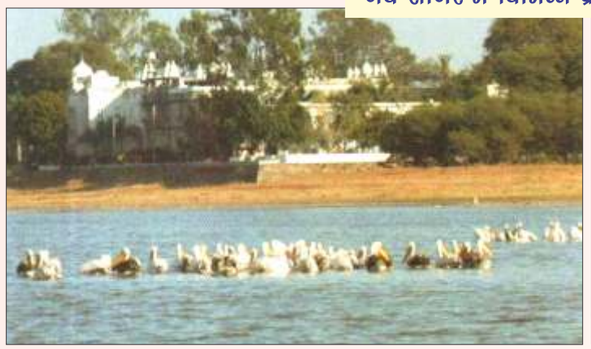

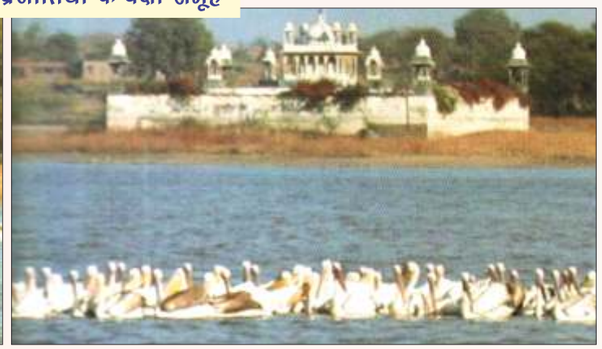

बाँसवाड़ा : सौ द्वीपों का शहर कहा जाने वाला बाँसवाड़ा देशी–परदेशी पक्षियों के प्रवास का पसन्दीदा शहर है। सुलवानिया तालाब, पातेला तालाब व खजूरिया तालाब में वर्ष 2013 में क्रमशः छः, ढाई एवं दो हजार पक्षी दिखे। 70 से ज्यादा देशी–विदेशी प्रजातियों के पक्षियों को देखा गया। इस बात का संकेत है कि बांसवाड़ा पक्षियों की शरणस्थली है। यहाँ पक्षी अभयारण्य की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। जिले में पक्षी अभयारण्य के लिहाज से पातेला व बाई तालाब बेहतर विकल्प हो सकते हैं। इसमें फेरिजिनस पोचार्ड, ग्रे लेग गुज, मार्बल्ड टील, लेसर व्हीसलींग टील, लीटल केक, पिनटेल स्निप सहित 16 नई प्रजातियों के पक्षी दिखाई दिए। सुलवानिया तालाब में सेगल पक्षी भी देखा गया। यह मध्य एशिया का प्रवासी पक्षी है।

गिद्धों की प्रजातियाँ : कभी उदयपुर की अरावली पर्वत शृंखलाओं में बसेरा करने वाले भारतीय गिद्ध अब लुप्तप्रायः हो चले हैं। इन्टरनेशनल यूनियन फॉर कन्जर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) इण्डिया की रिपोर्ट में यह बताया गया है कि घटते प्राकृतिक आवासों, बढ़ते प्रदूषण, कम होते जलाशयों और शिकार की वजह से देश के 15 पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। इस सूची में आने वाले सफेद पीठ वाले गिद्ध (White-backed vulture), भारतीय गिद्ध (Indian vulture), लाल सिर वाले गिद्ध (Red headed vulture) ऐसे हैं जो कभी उदयपुर के पहाड़ों के ही स्थायी निवासी थे। ये अधिकतर सज्जनगढ़, चीरवा घाटे, कैलाशपुरी, आसपास के सेंचुरीज आदि जगहों पर देखे जाते थे। पहले इनकी संख्या अच्छी थी पर अब ये बहुत कम रह गए हैं। इन्हें कभी–कभार ही देखा जाता है। इन गिद्धों के कम होने का सबसे बड़ा कारण हानिकारक दवाइयाँ हैं जो जानवरों के शरीर में पाई जाती हैं। ज्यादातर गाय, भेड़–बकरियों के बीमार होने पर डाइक्लोफेनिक सोडियम दवाई का प्रयोग किया जाता है। जब जानवर मृत हो जाते हैं और उनकी लाशों को गिद्ध खाते हैं तो वे भी मर जाते हैं। इस कारण गिद्धों की संख्या में निरन्तर गिरावट आ रही है।

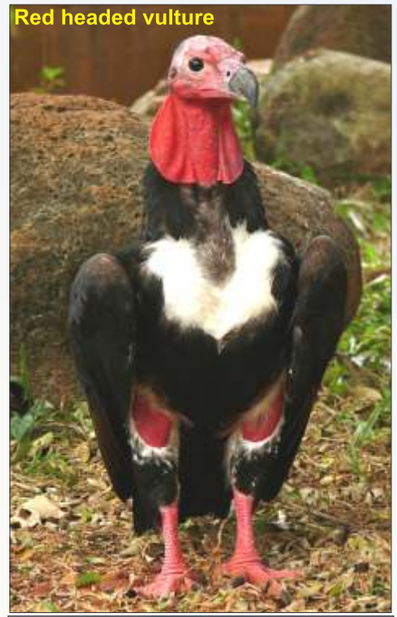

वन्य जीव विशेषज्ञों के अनुसार इन गिद्धों की संख्या 90 फीसदी से अधिक समाप्त हो चुकी हैं। ग्रिन वल्चर पाकिस्तान का मूल निवासी है जो सर्दियों में पश्चिमी भारत के रेगिस्तानी इलाकों में आता है। नेपाल, असम सहित यह अरावली की पहाड़ियों को पार करके पूर्वी राजस्थान के कुछ इलाकों में भी जब–तब आ जाता है और थार के रेगिस्तान और मारवाड़ क्षेत्र में नजर आता है। रेगिस्तान, सूखे पहाड़, छितराए पेड़ों के आसपास भरपूर भोजन मिलने के कारण यह प्रजाति इन इलाकों को ज्यादा पसंद करती है। किंग वल्चर स्थानीय प्रजाति है जबकि इंडियन वल्चर (लोंग्ड बिल्ड वल्चर) खड़ी चट्टानों और उभरे पत्थरों पर मिलता है। कैलाशपुरी में इसकी नेस्टिंग देखी गई हैं। मुख्य रूप से यह भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ व हाड़ौती क्षेत्र में दिखाई देता है। जाखम डेम के पास खड़ी पहाड़ी को गिद्ध मगरा के नाम से जाना जाता है। यहाँ अत्यधिक वल्चर पाये जाते हैं।

देशभर में विलुप्ति के कगार पर पहुँच चुके ग्रिफन वल्चर की उपस्थिति मेनार में दिसम्बर, 2017 को दर्ज की गयी है। इसके झुण्ड में किंग वल्चर (राज गिद्ध), इंडियन वल्चर के अलावा इजिप्शन वल्चर भी देखे गये। वन्य जीव विशेषज्ञ बताते हैं कि गिद्धों का इस तरह दिखना पर्यावरण के लिए शुभ संकेत हैं।

गिद्धों के संरक्षण के लिए प्रयास :

● जलाशयों में टापुओं को सुरक्षित रखने चाहिए क्योंकि गिद्ध टापू पर ही बसेरा करते हैं तथा देशी बबूल के पेड़ इन पर लगाए जाने चाहिए। ● जलाशयों के आसपास डिस्टरबेन्स फ्री जोन रखें, डवलपमेन्ट भी कम ही हो। ● पानी की बढ़त बनाएं रखें, जलीय वनस्पति पनपने दें, प्रदूषण नहीं करें। ● आसपास जो जंगल हैं उन्हें सुरक्षित रखें।

दक्षिणी राजस्थान के महत्त्वपूर्ण जलाशय – नम भूमियाँ : दक्षिणी राजस्थान अर्थात् उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा में 63 जलाशयों को चिह्नित किया गया हैं। राजस्थान के इस क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र एवं आर्थिक उन्नति में ये जलाशय महत्त्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इन जलाशयों के अतिरिक्त गाँवों में अनेक छोटे तालाब एवं पोखर हैं, जो वहाँ के पशुओं की प्यास बुझाने के साथ स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों को वर्षभर विचरण करने में सहयोगी बनते हैं। इनमें से कुछ को सांकेतिक रूप में पूर्व पृष्ठों में संक्षिप्त में दर्शाया गया है तथा कुछ गाँवों में पक्षियों की सुरक्षा के लिए ग्रामीणों का सहयोग भी अद्वितीय है। सभी ग्रामीणों से आग्रह है कि वे अपने गाँव के तालाब या पोखर की सीमा को राजस्व अभिलेख से प्रमाणित करवाकर कुछ क्षेत्र को छिछला रखते हुए उन्हें मनरेगा परियोजना के अन्तर्गत गहरा करवाकर इनके जल ग्रहण क्षमता में वृद्धि करवाने हेतु प्रयास करें ताकि पक्षी वर्षभर डेरा डालकर रहने के अतिरिक्त गांव के कुओं एवं नलकूप के जल स्तर में भी वृद्धि हो सकेगी। साथ ही गाँव के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में भी अप्रत्याशित सुधार संभव हो सकेगा।

जलाशय का नाम	स्थिति
पिछोला	उदयपुर शहर
फतहसागर	उदयपुर शहर
दूध तलाई	उदयपुर शहर
स्वरूप सागर	उदयपुर शहर
गोवर्द्धन सागर	उदयपुर शहर
रूपसागर	उदयपुर शहर
बड़ी तालाब	सज्जनगढ़ अभयारण्य के पश्चिम में
उदय सागर	उदयनिवास के पास
बाघदड़ा तालाब	बाघदड़ा नेचर पार्क में
चौकड़िया बाँध	झाड़ोल रोड़ पर
ओगणा बाँध	ओगणा गांव के पास
सेई डेम	देवला के पास
घासा तालाब	मावली के पास
भटेवर तालाब	सिंघानिया विश्वविद्यालय के पास
आमलिया तालाब	भटेवर के पास
सरजना एवं कम्बोड़िया	वल्लभनगर में
मेनार तालाब	मंगलवाड़ रोड़ पर
खेरोदा तालाब	खेरोदा गांव के पास
नगावली तालाब	मंगलवाड़ के पास
मंगलवाड़ तालाब	मंगलवाड़ के पास
घोसुण्डा बाँध	मंगलवाड़ के पास
वागन बाँध	उदयपुर–बड़ी सादड़ी रोड़ पर
बड़वई तालाब	भीण्डर के पास
डाया बाँध	जयसमन्द रोड पर
पिलादर तालाब	जयसमन्द अभयारण्य में
जयसमन्द झील	सलूम्बर रोड़ पर
हरचन्द तालाब	सराड़ा तहसील में
केजड़ तालाब	सराड़ा के पास
सोमकागदर बाँध	ऋषभदेव के पास
कैला ापुरीतालाब	नाथद्वारा रोड़ पर
राजसमन्द झील	राजसमन्द शहर

जलाशय का नाम	स्थिति
राजियावास तालाब	राजियावास गांव के पास (राजसमन्द)
गुरला तालाब	उदयपुर–भीलवाड़ा रोड़
मेजा बाँध	भीलवाड़ा जिले में मेजा गांव के पास
अरवड़ बाँध	भीलवाड़ा जिले में
सरेरी बाँध	भीलवाड़ा जिले में सरेरी गांव के पास
त्रिवेणी संगम	भीलवाड़ा जिले में
जोगी तालाब	उदयपुर–अहमदाबाद रोड़ पर
टीडी डेम	उदयपुर जिले में अहमदाबाद रोड़ पर
बागोलिया तालाब	मावली के पास
पुरोहितजी का तालाब	गमधर पौधशाला के पास
कंथारिया बाँध	झाड़ोल तहसील में
झाड़ोल बाँध	झाड़ोल गांव के पास
मानसी वाकल बाँध	गोराणा गांव के पास
रणकपुर/सादड़ी बाँध	रणकपुर के पास
जवाई बाँध	जवाई बाँध रेलवे स्टेशन के पास
बस्सी बाँध	बस्सी अभयारण्य में
गैप सागर	डूंगरपुर शहर
सोम–कमला–आम्बा बाँध	आसपुर के पास
बाघेरी का नाका	कुम्भलगढ़ रोड पर
जाखम बाँध	सीतामाता अभयारण्य में
भटेवर तालाब	भटेवर के पास
नन्दसमन्द	जावर माइन्स के पास
नागमाला तालाब	फलासिया–सोम रोड पर
साबला तालाब	डूंगरपुर के पास
चुण्डावाड़ा तालाब	डूंगरपुर जिले में बिछीवाड़ा के पास
डीमिया तालाब	डूंगरपुर जिले में डीमिया गांव के पास
लक्ष्मण सागर	डूंगरपुर में माण्डव गांव के पास
लोहारिया तालाब	बांसवाड़ा में लोहारिया गांव के पास
माही बाँध	बांसवाड़ा जिले में
कड़ाना बैक वाटर	बांसवाड़ा जिले में
करावाड़ा तालाब	डूंगरपुर जिले में करावाड़ा के पास
धम्बोला तालाब	डूंगरपुर जिले में धम्बोला के पास

पक्षियों के पसन्दीदा तालाब

पक्षियों का संरक्षण : बड़े बाँध, छोटे तालाब, पोखर में पक्षियों के संरक्षण हेतु निम्न सुझावों पर विशेष ध्यान देने पर प्रत्येक जलाशय में स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों की संख्या एवं ठहराव अवधि में आशातीत वृद्धि हो सकेगी। • तालाबों में गन्दगी न डाले। • पक्षियों के आवास क्षेत्र और भोजन शृंखला में बाधा न बने। • न तो पक्षियों का शिकार करें, न करने दें। •झीलों से पानी का उपयोग कम कर 2–3 फीट गहरे पानी का विस्तार अवश्य बनाये रखे। नदी में पानी का न्यूनतम् बहाव बनाया रखा जावे। • शोरगुल और वाहनों की आवाजाही कम रखें। • आसपास तीव्र प्रकाश न रखें। •छोटी झीलों में नौकायन पर प्रतिबन्ध लगाये एवं बड़ी झीलों में नौकायन सीमित क्षेत्र में हो। पिछोला, फतहसागर में हो रही बोटिंग झीलों व पक्षियों के लिए घातक सिद्ध हो रही है। पेट्रोल–डीजल चलित बोटों से निकलने वाला अपशिष्ट जलीय जीवों के साथ बर्ड्स लाइफ पर भी विपरीत प्रभाव डाल रहा है। •झीलों में चप्पू एवं सौर/बेटरी ऊर्जा चालित नौकाओं के संचालन को बढ़ावा दिया जावे। • झीलों के जिन क्षेत्रों में पक्षी प्रवास करते हो, वहां मत्स्य आखेट पर पूर्ण प्रतिबन्ध हो। बड़ी झीलों में यह आखेट नियंत्रित रूप से करते हुए छोटी मछलियों को नहीं निकालना चाहिये। •झीलों के किनारे व छिछले पानी में मिट्टी के टापू बनाकर हरीतिमा विकसित करें। •जलाशयों के टापू को सुरक्षित रहने देना चाहिए। इन टापुओं पर घोंसला स्थल (नेस्टिंग प्लेट फार्म) बनाने चाहिये, जहां पक्षी अपने अण्डे एवं छोटे पक्षियों को सुरक्षित रख सकें। टापुओं पर ब्रान्च स्टेम्प भी गाड़ दिये जाये। •झील के कुछ क्षेत्र या चयनित टापुओं को वन्य जीव सैरगाह (वाइल्ड लाइफ रिसोर्ट्स) के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। •पहाड़ों की वनस्पतियों को सुरक्षित रखें। •झील की निरन्तरता को खत्म नहीं करें। •झीलों से मिट्टी, गाद आदि निकालने के कार्य व्यवस्थित रूप से करते हुए गाद गहराई क्षेत्र से निकाला जाना चाहिये। किनारों को छिछला ही बनाये रखा जाना चाहिये। छिछले क्षेत्र पक्षियों के आवास हेतु उपयुक्त होते हैं एवं उनका उचित प्रबन्धन किया जावे।

उदयपुर झीलों में मेहमान पंछी : उदयपुर की मुख्य झील पिछोला में दिसम्बर 2013 के करीब 60, तो उदयसागर व अन्य क्षेत्रों में करीब 75 प्रजातियों के पंछी आए। इसे उदयपुर के बरसों पुराने पर्यावरणीय तंत्र का पुनर्विकास माना जा रहा है। पंछियों की संख्या में वृद्धि को झीलों में प्रदूषण की कमी का संकेत भी कहा जा रहा है। पिछले कुछ सालों से झीलों में लगातार पानी बना रहना भी पंछियों के लिए मुफीद आवास का महत्त्वपूर्ण कारण है। दलदली भूमि, जरूरी वनस्पति व भोजन पर्याप्त मिलने पर ही पंछी ठहरते हैं।

देवास परियोजना से लगातार पानी की आवक ने जिस तरह झीलों में जल की उपलब्धता में बरकत होने पर झीलें सरसब्ज रहेंगी, पंछियों को भी उनके पसन्द का आवास–भोजन मुहैया होता रहेगा। इसकी शुरूआत हो चुकी है एवं नियमित उपलब्धता पर पक्षीविद् पंछियों की संख्या में अगले वर्षों में इजाफे की उम्मीद जता रहे हैं। शहर की झीलों में व्हाइट आई पोचार्ड जैसा मेहमान पंछी उदयपुर के लिए तोहफे की तरह आया है तो स्नेकबर्ड (डार्टर) ने भी बरसों बाद फिर से उदयपुर को अपना बसेरा बनाया है।

झीलों में मेहमान पंछियों की प्रजातियाँ

नम भूमि क्षेत्र	कुल प्रजातियाँ	प्रवासी प्रजातियाँ	बत्तख के प्रकार
पिछोला झील	करीब 60	20	12
फतहसागर झील	करीब 30	05	03
उदयसागर व अन्य	करीब 75	30	14

विभिन्न झीलों की बत्तखें	
लेसर व्हीस्लिंग टील्स	स्थानीय
कॉम्ब डक	स्थानीय
स्पॉट बिल्ड डक	स्थानीय
बार हैडेड गूज	प्रवासी
रूडी शेलडक	प्रवासी
गड़वाल	प्रवासी
यूरेसियन वेगन	प्रवासी
कॉटन पिग्मी गूज	प्रवासी
कॉमन टील	प्रवासी
नॉर्थर्न पिनटेल	प्रवासी
नॉर्थर्न शॉवलर	प्रवासी
कॉमन पोचार्ड	प्रवासी
फेरूजिनस पोचार्ड	प्रवासी
टफ्टेड डक	प्रवासी

व्हाइट आई पोचार्ड : विलुप्त होने की कगार पर पहुँच चुके "व्हाइट आई पोचार्ड" उदयपुर की झीलों का मेहमान बन रहे हैं। इसे फेरोजिनस पोचाई भी कहते हैं। भूरे रंग के शरीर पर सफेद धारी और आँखों के चारों ओर चमकदार सफेद घेरा इसकी पहचान है। यह यूरोपियन देशों से सर्दी के मौसम में भारत आते हैं। यह बड़ी संख्या में पिछोला झील में आते हैं।

स्नेक बर्ड : उदयपुर से रूठ चुका स्नेक बर्ड भी फिर से यहाँ बसेरा कर रहा है। सन् 1990 के बाद से ही गायब हुए स्नेकबर्ड (डार्टर) की पिछले तीन साल से पिछोला में सिर्फ उपस्थिति नजर आ रही थी। वर्ष 2013 में उसने प्रजनन की प्रक्रिया पूरी की है जिसे पक्षीविद् भी अच्छा संकेत मान रहे हैं। हालांकि डार्टर पक्षियों ने उदयपुर शहर से दूर स्थित मेनार के तालाब में बसेरा बनाया है।

पक्षी जगत – देश, राज्य एवं उदयपुर अंचल में महत्त्व एवं बर्ड वॉचिंग : कशेरुकी (Vertebrates) जीव, जीव जगत का उच्च स्तरीय विकसित वर्ग है। इसमें अति सुन्दर, अति सुरीले पक्षियों का वर्ग अति प्रशंसनीय है, जिन पर अनेक शोध और विस्तृत अध्ययन हुए हैं। पक्षी पूरे विश्व में पाये जाते हैं और पृथ्वी पर इनकी संख्या भी मछली वर्ग को छोड़कर अन्य कशेरू की जीवों में सर्वाधिक संख्या में हैं। बर्फ से ढके अण्टार्टिका महाद्वीप के मध्य भाग को छोड़कर विश्व के अन्य भागों में ये सर्वत्र व्याप्त है। कुछ पक्षी तो भूमि के भीतर भी अपने घोंसले बनाकर रहते हैं। पक्षी गर्म रक्त वाले, अण्डज प्राणी, जिनके दो पैर होते हैं एवं जिनके शरीर पर परों का आवरण एवं शरीर पर एक जोड़ी पँख होते हैं, पक्षी कहलाते हैं। भोजन पकड़ने हेतु दांत रहित चिमटीनुमा चोंच की उपस्थिति उनका मुख्य लक्षण होता है।

मानव और पक्षियों के बीच बहुत पुराना और प्रगाढ़ सम्बन्ध रहा है। पक्षी हमें पर्यावरण के विषय में विश्वसनीय सूचनाएँ उपलब्ध कराते हैं जो हमारे स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए बहुत उपयोगी और लाभदायक होती हैं। पक्षी हमें पर्यावरण में उपस्थित घातक तत्वों और रसायनों की उपस्थिति की भी पूर्व सूचना उपलब्ध करवाते हैं। पक्षी प्रकृति और पर्यावरण के मध्य संतुलन बनाये रखने की प्रमुख भूमिका का निर्वहन भी करते हैं। गिद्ध जैसे पक्षी मृत पड़े जीवों को खाकर सफाई का जिम्मा संभालते हैं, जिनमें कीट, पतंगे और चूहों पर नियंत्रण अति महत्त्वपूर्ण हैं। पक्षी पेड़–पौधों में परागण और कठोर बीजावरण वाले बीजों को खाकर उन्हें उपच या मल के रूप में निकाल कर सहजता से अंकुरण होने में सक्षम बनाते हैं। विसर्जन के साथ ही साथ अपशिष्ट पदार्थों के निराकरण में भी सक्रिय रहते हैं। इसमें भारतीय मूल की आश्चर्यजनक चिड़िया रेड जंगल फाउल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसे पूरे विश्व की कुक्कट प्रजातियों की जननी माना गया है। इस वन्डर बर्ड का मानव स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र के शोधों में महत्त्वपूर्ण योगदान है। इनकी लाभदायक भूमिका के कारण ही मोर, गरूड़, सारस, नीलकण्ठ आदि का धर्मशास्त्रों में भी उल्लेख मिलता है।

पक्षी जगत एवं भारत–उदयपुर संभाग : भारत में पक्षियों की जैव विविधता को बहुत समृद्ध माना गया है। विश्व में पायी जाने वाली 9000 पक्षी प्रजातियाँ हैं जिन्हें 27 प्रमुख वर्ग और 155 फेमेलियों में वर्गीकृत किया गया हैं। इनमें से 1200 प्रजातियाँ भारत में पायी जाती हैं जिनमें 20 वर्ग और 77 फेमेलियाँ हैं। इस प्रकार भारत विश्व के संपूर्ण भू–भाग का मात्र 4 प्रतिशत होते हुए भी 13 प्रतिशत पक्षी प्रजातियों का योगदान कर रहा है। भारत की कुल 1200 प्रजातियों में से 900 तो स्थानीय प्रजातियाँ हैं और 300 प्रवासी प्रजातियाँ हैं जो शरदकाल में मध्य एशिया और पूर्वी यूरोप से आती हैं। राजस्थान उत्तर–पश्चिमी क्षेत्रों से शरद ऋतु में पलायन करने वाले पक्षियों के मुख्य वायु मार्ग पर स्थित है, अतः प्रवासी पक्षी राजस्थान पहुँचते हैं। इन प्रवासी पक्षियों में से कुछ तो उड़कर निकल जाते हैं और शेष यही पर ठहर जाते हैं। राजस्थान में ऐसे अनेक जलाशय है जो स्थानीय और प्रवासी दोनों ही प्रकार के पक्षियों के प्राकृतिक आवास स्थल है। दक्षिणी राजस्थान विशेषकर उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा आदि जिलों में अनेक झीले एवं वाटर बॉडीज हैं जिनमें विभिन्न डक्स, क्वीजी के साथ पेलीकन्स और कभी–कभी फ्लेमिंगो की प्रजातियाँ भी देखने को मिलती है। उदयपुर नगर एवं इसकी परिधि के जलाशयों में लगभग 242 प्रजातियों के पक्षी पाये जाते हैं। इनमें करीब 102 प्रजातियाँ जलीय एवं 140 प्रजातियाँ स्थलीय पक्षियों की हैं। उदयपुर की झीलों एवं आसपास के जलाशयों में 150 प्रजातियाँ शीतकालीन प्रवासी पक्षियों की हैं जो प्रतिवर्ष शीतकाल में प्रवास पर आती है।

बर्ड वॉचिंग का उद्देश्य एवं महत्त्व : प्राकृतिक संतुलन में बहुत बड़ी भूमिका निभाने वाले पक्षियों का संरक्षण बर्ड वॉचिंग के माध्यम से ही किया जा सकता है। पक्षियों को उनके प्राकृतिक आवास में उनकी जैविक क्रियाओं को करते हुए देखना, पहचानना एवं प्रसन्नता व आनन्द अनुभव करना ही बर्ड वॉचिंग है। बर्ड वॉचिंग से मनुष्य को प्रकृति का सान्निध्य मिलता है और उसके तनावों और मनोरोगों का अन्त होता है।

बर्ड वॉचिंग से मनुष्य का पक्षियों सम्बन्धित ज्ञान बढ़ता है एवं पक्षी विज्ञान के रहस्यों की नई–नई जानकारियाँ उजागर होती हैं। पक्षी संरक्षण से झीलों का पारिस्थितिकी तन्त्र एवं प्रदूषण नियंत्रण में रहेगा। इसके लिए शहर का प्रत्येक नागरिक विशेषकर युवा एवं विद्यार्थी वर्ग पूर्ण जागरूक रहे। प्रत्येक विद्यालय में 'पर्यावरण क्लब' बने एवं विद्यार्थियों को बर्ड वॉचिंग के लिए प्रेरित करे। बर्ड वॉचिंग खुली आंखों से लेकर बायनाकुलर, टेलीस्कॉप व स्पॉटिंग स्कॉप की मदद से किया जा सकता है। हम अपने आसपास, किचन, गार्डन, वृक्षों, मोहल्ले की नालियों के आसपास, झीलों के किनारे एवं झीलों के अन्दर, सार्वजनिक उद्यानों, चुग्गा स्थलों व धार्मिक स्थलों के पास, होटलों के जूठन फेंकने के स्थलों पर, मृत पशु फेंकने की जगहों पर, कचरा स्थलों, नदी, नालों, तालाबों, एनीकटों, बाँधों व अन्य कई जलाशयों के आसपास, चारागाहों एवं वन क्षेत्रों में हर कहीं किसी न किसी पक्षी को अवश्य देख सकते हैं। इन स्थानों पर पक्षी घोंसला बनाते हुए बच्चों का लालन–पालन करते हुए, चहकते हुए, पानी या मिट्टी में नहाते हुए एवं अन्य कोई न कोई गतिविधि करते हुए अवश्य मिल जायेंगे। इनकी क्रियाओं में व्यवधान डाले बिना शांति से एवं धीरे–धीरे कुछ पास जाकर किसी वृक्ष, झाड़ी, भवन या किसी दूसरी चीज की ओट में रह कर इनकी गतिविधियों को देखा जा सकता हैं तथा पक्षियों के शरीर की बनावट, रंगों, चलने के ढंग, बोली आदि का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

प्रारम्भ में आसपास के बड़े पक्षियों जैसे मोर, कोयल, कौवा, तोता, फाख्ता, नीलकंठ, बगुला, बतख, गिद्ध, कबूतर आदि को खुली आंखों से देखकर ही पक्षी अवलोकन का श्रीगणेश किया जा सकता है। बाद में छोटे व दूरस्थ पक्षियों को बायनोकुलर व टेलीस्कॉप से देखा जा सकता है। पक्षी देखने के लिए सफेद व तड़क–भड़क वाले कपड़े नहीं पहनने चाहिए। हरे व खाकी रंग के कपड़े एवं केप उत्तम रहते हैं क्योंकि इस रंग के कपड़े आसपास के वातावरण में घुल मिल जाते हैं। बर्ड वॉचिंग करने वाले व्यक्ति के पास बायनोकुलर, पक्षियों की फिल्ड–गाईड, नोट–बुक, पेन–पेन्सिल, पानी की बोतल, उचित वेशभूषा, एक हरा या खाकी थैला जिसमें सामान रखा जा सके, होने चाहिये। यदि कैमरा हो तो और भी अच्छा। बर्ड वॉचिंग के दौरान मोबाइल से संगीत नहीं सुने। शोर–शराबा, बातचीत नहीं करें। अण्डों–घोंसलों को कदापि न छेड़ें। यदि पक्षी झाड़ियों में घुसा है तो धैर्य रखें, उसके निकलने का इंतजार करें। पक्षी आवासों में प्रदूषण न फैलायें।

बर्ड फेयर : बर्ड फेयर के माध्यम से पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष एक निश्चित दिनांक एवं अवधि का बर्ड फेयर वन विभाग, पर्यटन विभाग, स्थानीय पक्षी प्रेमी संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किये जाते हैं। भविष्य में और व्यापक रूप से आयोजित करने चाहिये। बर्ड फेयर के दौरान पक्षी मित्र उदयपुर की झीलें, तालाब–मेनार, नगावली, मंगलवाड़, बड़वई के साथ डूंगरपुर का गेप सागर एवं पाली का जवाई बाँध आदि की सैर आयोजित हो रही है। कुछ और तालाब एवं झीलों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिये।

झीलों में प्रवासी पक्षी : पिन टेल, शावलर, गार्गेनी, विजन, पोचार्ड कॉमन क्रेन, सेंड पाइपर, वूड पाइपर, रफ एण्ड रीव लिटिल स्टिन्ट, कोमन स्टिन्ट, व्हाइट टेल्ड लेप, पेलीकन, पलाश फिश ईगल (समुद्री पक्षी), पाइड कुकू, ग्रीन मुनिया आदि झीलों में मुख्यतः देखे गये हैं।

झीलों में स्थानीय पक्षी : स्पाट बिल डक, सारस क्रेन, कॉटन टील, छोटा जल कौव्वा, मध्यम जल कौव्वा, बड़ा जल कौव्वा, स्नेक बर्ड, पेंटेड स्टोर्क, वुली, नेम्ड स्टोर्क, ब्लैक नेम्ड स्टोर्क, फ्लेमिंगो, आरोरा (छोटी चिड़िया), ग्रेट व्हाईट पैनिकल आदि।

राजहंस (फ्लेमिंगो) : उदयपुर की आबोहवा अब फिर से राजहंस (फ्लेमिंगो) को रास आने लगी है। राजस्थान के सांभर और भरतपुर में सबसे ज्यादा फ्लेमिंगो पाए जाते हैं। दक्षिणी राजस्थान में राजहंस कच्छ गुजरात से सर्दियों में आकर प्रवास करते हैं। शहर की मेनार एवं उदयसागर झील के छिछले पानी में इन्हें प्रचुर मात्रा में दाना–पानी मिलने से यहाँ प्रवास करते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में पक्षी : व्हाइट नेप्ड हिट, ग्रीन मुनिया, ब्लैक नेक्ड स्ट्रॉर्क, ओपन बिल्ड स्ट्रोक, सारस, पैरेडाइज, फ्लाई कैचर एवं इंडियन पिट्टा, पाइड, कुकू, यूरोपियन रोलर व अन्य बर्ड्स इस ऋतु में दिखते हैं।

शीत ऋतु में पक्षी : कॉमन क्रेन, फ्लेमिंगो, पेलिकन, नॉर्दन शॉवलर, इंपीरियल ईगल, स्पूनबिल, ईग्रीट्स, साइबेरियन क्रेन आदि।

दुर्लभ पक्षी : प्रवासी पक्षियों में गार्गेनी, पिनटेल, मार्डन शॉवलर, कॉमन रेडसक, लिटिल स्टीन्ट, वुड सेन्ड पांइपर, गाडवीट, आदि के साथ स्थानीय पक्षी ब्लैकविंग्ड स्टील्ट, लेपविंग, स्मॉट बिल्ट डक पाये जाते हैं। दक्षिणी एशिया प्रवास से पुनः अपने मूल आवास मध्य एशिया में लौटते समय भारत में आता है। इस पक्षी की उपस्थिति सर्दी के मौसम की समाप्ति व तापमान में वृद्धि का संकेत है।

शाही फॉल्कन : यह दुर्लभ पक्षी पाली जिले के जवाई बाँध में देखा गया। यह पक्षी पहाड़ी क्षेत्र के जलाशयों पर भी देखा जा सकता है। पानी में तेज गति से तैरने के कारण इसे पक्षियों का गोताखोर भी कहा जा सकता है।

ब्लेक क्राउन्ड नाईट हेरॉन (Black crowned night heron)

केट्ल इग्रेट (Cattle egret)

कूट (Coot)

लिट्ल कारमोरिन्ट (Little cormorant)

सारस क्रेन (Sarus Crane)

रेड वेट्लड लेपिंग (Red wattled lapwing)

रेड वेट्लड लेपिंग (Red wattled lapwing)

ब्लेक विंग्ड स्टिल्ट (Black winged stilt)

पेन्टेड स्टार्क (Painted stork)

यूरोपियन रोलर (European Roller)

स्पून बिल (Spoon Bill)

शाहीन फाल्कन (Shaheen falcon)

रामसर समझौता : विगत 50 वर्षों में विश्व जन समुदाय द्वारा पारिस्थितिकी तन्त्र के महत्त्व को समझा गया है। दिनांक 2 फरवरी, 1971 को विश्व के 18 देशों की सहभागिता से ईरान के रामसर में सम्पन्न हुए अन्तरराष्ट्रीय नम भूमि सम्मेलन में विश्व स्तर पर नम भूमि बचाव की रूपरेखा बनाई गई थी और वर्ष 1975 में यूनेस्को ने इसकी गतिविधियों को अपनाया। रामसर कन्वेन्सन की कार्य–योजनाओं के अन्तर्गत सन् 1982 और 1987 में दिशा–निर्देशों में कुछ संशोधन किये गये। बढ़ते जैविक दबाव के कारण नम भूमियों की गुणवत्ता में काफी गिरावट आ रही हैं जिससे प्रवासी–अप्रवासी पक्षियों के लिए संकट पैदा हो रहा है। इसे देखते हुए दिनांक 2 फरवरी को अन्तरराष्ट्रीय नम भूमि दिवस मनाया जाता है ताकि नम भूमि को संरक्षित कर जलीय वनस्पति व पक्षियों को बचाया जा सकें।

रामसर समझौता : यह एक अन्तरराष्ट्रीय समझौता है, जो राष्ट्रीय सक्रियता एवं अन्तरराष्ट्रीय सहयोग का बुनियादी ढाँचा है। इसके माध्यम से नम भूमियों के संरक्षण के साथ उनके संसाधनों का कुशल उपयोग संभव हैं। समझौते के सदस्य देशों के संपूर्ण समतल भौगोलिक क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। इस समझौते के अन्तर्गत पूरे विश्व में नम भूमियों के संरक्षण एवं कुशल उपयोग, स्थानीय एवं राष्ट्रीय सक्रियता एवं अन्तरराष्ट्रीय सहयोग से उनके मूल रूप को कायम रखते हुए विकास करना है।

राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना (एनएलसीपी) : इस परियोजना के तहत देश की शहरी एवं सेमी अरबन झीलों को पूर्व स्थिति में लाने के साथ संरक्षित करना है, जो गन्दे एवं सीवरेज जल गिरने से प्रदूषित हो रही है एवं अन्य शुद्ध जल तंत्र जो विकृत हो रहे हैं, उन्हें समन्वित पारिस्थितिकी तंत्र से सुधारना हैं। रामसर समझौते के अनुसार नम भूमि पानी एवं भूमि के मध्य एक कड़ी है। नम भूमि ''वह क्षेत्र है जिसमें दलदल, जलमग्न एवं सड़ी–गली घासयुक्त (Peat Land) भूमि शामिल है। प्राकृतिक पदार्थ युक्त भूमि या पानी जो प्राकृतिक या कृत्रिम, स्थायी या अस्थायी (अल्पकालीन), पानी जो स्थिर या बहता हुआ, साफ, शुद्ध, क्षारयुक्त क्षेत्र जिसमें समुद्री पानी, जिनमें हल्की लहरों के साथ गहराई 6 मीटर से अधिक न हो, नमभूमि की श्रेणी में आता है। रामसर समझौता के अनुसार तीन तरह की नमभूमि होती है :– (1) समुद्र तटीय नम भूमि (2) भीतरी नम भूमि (3) मानव निर्मित नम भूमि। नम भूमि की मिट्टी वर्ष के कुछ समय तक जलाक्रांत रहती है। पानी खारा या मीठा या साफ हो। भूजल विज्ञान एवं फ्लोरा वनस्पति (फ्लोरा) और जन्तु समूह (फोना) की विभिन्नता के अनुसार नमभूमि को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है:– (1) छिछली–उथली (शेलो) (2) दलदल (मार्श) (3) जलमग्न भूमि (स्वेम्पस्) (4) धँसाऊ भूमि (बोग्स) (5) दलदल से घिरी भूमि (फेन्स)।

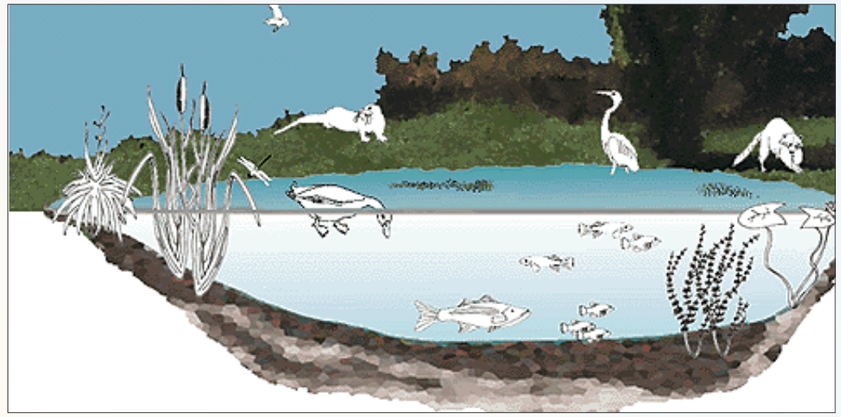

छिछली–उथली (शेलो)

दलदल (मार्श)

जलमग्न भूमि (स्वेम्पस्)

धँसाऊ भूमि (बोग्स)

दलदल से घिरी भूमि (फेन्स)

RAMSAR SITES IN INDIA

S.No.	Name	S.No.	Name
1.	Ashtamudi Wetland, Kerala	14.	Point Calimere Wildlife & Bird Sanctuary, Tamil Nadu
2.	Bhitarkanika Mangroves, Orissa	15.	Pong Dam Lake, Himachal Pradesh
3.	Bhoj Wetland, Madhya Pradesh	16.	Renuka Wetland, Himachal Pradesh
4.	Chandertal Wetland, Himachal Pradesh	17.	Ropar, Punjab
5.	Chilika Lake, Orissa	18.	Rudrasagar Lake, Tripura
6.	Deepor Beel, Assam	19.	Sambhar Lake, Rajasthan
7.	East Calcutta Wetlands, West Bengal	20.	Sasthamkotta Lake, Kerala
8.	Harike Lake, Punjab	21.	Surinsar-Mansar Lakes, Jammu & Kashmir
9.	Hokera Wetland, Jammu & Kashmir	22.	Tsomoriri, Jammu & Kashmir
10.	Kanjli, Punjab	23.	Upper Ganga River, Uttar Pradesh
11.	Keoladeo National Park, Rajasthan	24.	Vembanad-Kol Wetland, Kerala
12.	Kolleru Lake, Andhra Pradesh	25.	Wular Lake, Jammu & Kashmir
13.	Loktak Lake, Manipur		

नम भूमि का महत्त्व : पानी का भण्डार एवं नियमित जल उपलब्धता सुनिश्चित करना, बाढ़ नियंत्रण में सहयोग, भूजल पुनर्भरण, भूजल स्तर बनाये रखना। समुद्रतटों को स्थिर एवं तूफान से सुरक्षित रखना, जल शुद्धीकरण, प्रदूषक पदार्थ छानना, वनस्पतियाँ एवं जन्तु समूह की अनेक प्रजातियों को प्राकृतिक आवास प्रदान करना, पर्यटन एवं मनोरंजन के सुअवसर, भूमि कटाव को रोकना, जल पक्षी एवं वन्य जीव–जन्तुओं की नर्सरी स्थल, स्थानीय लोगों को रोजगार, व्यावसायिक मछली पालन आदि हेतु नम भूमियों का अपना विशेष महत्त्व है।

नम भूमियों के महत्त्वपूर्ण तथ्य :–

(1) नम भूमियाँ दुनिया का करीब 6.4 प्रतिशत क्षेत्र घेरती है।
(2) उसमें से 30% धँसाऊ भूमि (बोग्स), 26% दलदल से घिरी भूमि (मार्श), 20% जलमग्न भूमि (स्वेम्पस्) एवं लगभग 15% बाढ़ क्षेत्र आदि। (IUCN 1999)
(3) नम भूमि में दुनिया के कुल जल स्रोत का मात्र 0.0001% पानी है, वह पारिस्थितिकी तन्त्र का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। (IUCN 1996)
(4) दुनिया में करीब 50% नम भूमि पिछली शताब्दी में नष्ट हो चुकी है, मुख्यतया कृषि के लिए जल निकास, शहरी विकास एवं जल तंत्र नियंत्रण आदि के कारण।
(5) देश में एक अनुमान के आधार पर 4.1 मिलियन हेक्टेयर नम भूमि है। इसमें से 1.5 मिलियन हेक्टेयर प्राकृतिक नम भूमि एवं 2.6 मिलियन हेक्टर मानव निर्मित नम भूमि है।
(6) शुद्ध जल नम भूमि अकेली 20 प्रतिशत जैव विविधता को सहारा देती है।
(7) भारत में नम भूमि में देश के भौगोलिक क्षेत्रफल का करीब 18.4 प्रतिशत क्षेत्र आता है, जिसमें 70 प्रतिशत क्षेत्र पर धान की खेती होती है।
(8) तटीय नम भूमि का क्षेत्रफल करीब 6750 वर्ग किलोमीटर है जहां उष्ण कटिबन्धीय वृक्ष (मेनग्रोव) वनस्पति का प्रभुत्व है।

भारतीय वन्य जीवन (वाइल्ड लाइफ) संस्थान द्वारा किये गये अध्ययन के अनुसार देश में नम भूमि अदृश्य होने की रफ्तार 2 से 3 प्रतिशत प्रतिवर्ष है। भारत में रामसर साईट्स के तहत 25 नम भूमि को चयनित किया हैं, उसमें केवलादेव नेशनल पार्क एवं सांभर लेक राजस्थान की मुख्य नम भूमियाँ हैं। राजस्थान में करीब 52733 हेक्टेयर नम भूमि क्षेत्र चिह्नित हैं।

नम भूमि के कम होने के मुख्य कारण :

(1) नम भूमि का कृषि भूमि में परिवर्तन (2) नम भूमि में वृक्षों की कटाई
(3) भूमीय जल प्रत्यावर्तन (4) बाँध एवं जलाशय क्षेत्र का पानी से ढ़क जाना
(5) ऊँची नम भूमि का प्रत्यावर्तन (6) जल गुणवत्ता में गिरावट
(7) भू–गर्भ जल की कमी से लवणीयकरण
(8) स्थानीय पौध प्रजातियों का प्रवासी प्रजातियों द्वारा स्थानापन्न
(9) प्रदूषण (10) ठोस कचरा एवं भराव का संग्रह स्थल
(11) जल भाग में निरन्तर वृद्धि (12) दुनिया का जलवायु परिवर्तन
(13) शहरीकरण एवं विकास गतिविधियाँ
(14) जलीय जीव पालने की क्रिया में वृद्धि
(15) नम भूमि प्राकृतिक संकट – कटाव, उतार, समुद्री जल स्तर में वृद्धि, सूखा, आँधी, तूफान आदि प्रमुख कारण है।

नम भूमि एवं जलवायु परिवर्तन : नम भूमि दुनिया के जलवायु परिवर्तन से प्रभावित होती है एवं यह जलवायु परिवर्तन की गंभीरता के अल्पीकरण एवं बदलने की प्रक्रिया को कम करती है।

जलवायु परिवर्तन का नम भूमि पर प्रभाव :

(1) वर्षा की कमी से नम भूमि घटती एवं सिकुड़ती हैं एवं नम भूमियों का भौगोलिक परिवर्तन भी संभव है।
(2) तापमान वृद्धि से तापमान संवेदनशील प्रजातियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है एवं जल वाष्पीकरण दर में महत्त्वपूर्ण वृद्धि होती है।
(3) जलवायु परिवर्तन से समुद्री जल स्तर में वृद्धि के साथ तटीय लहरों, आँधी–तूफान, तटीय जलाक्रान्त की तीव्रता में वृद्धि होती है। नम भूमि कार्बन वृद्धि के अल्पीकरण में कमी लाती है एवं सहयोगी होती है।

भारत में नम भूमि संरक्षण : भारत रामसर समझौते का एक सदस्य देश है। उसने नम भूमियों के संरक्षण एवं उन्हें सुरक्षित रखने हेतु अनेक अधिकारिक पहल की है।

विश्व की नम भूमियाँ जो पानी एवं जलीय जीवों के अतिरिक्त कुछ विशेष उत्पादन करती हैं, जिनमें से मुख्य हैं :–

(1) ग्रेट साल्ट लेक आफ उटा (Utah) – नमक उत्पादन
(2) सांभर लेक ऑफ राजस्थान – नमक उत्पादन
(3) सोनार लेक ऑफ महाराष्ट्र – सोडियम कार्बोनेट
(4) लेक गुआनाको (Lake Guanaco) और बरमुडेज वेनेरजुअला (Bermudez Venejuala) – डामर उत्पादन
(5) पिच लेक ऑफ ट्रीनिडाड(Pitch Lake of Trinidad) : डामर उत्पादन
(6) अथबास्का लेक (Athabaska) अलबर्टा(कनाड़ा)–तेल उत्पादन
(7) फायर आईस – केस्पेरियन सागर में मीठे पानी की झील – मिथेन गैस उत्पादन।

कानूनी पहल : अभी तक कोई भी विशेष बुनियादी कानूनी ढाँचा नम भूमि संरक्षण, प्रबन्धन एवं कुशल उपयोग के लिए नहीं बनाया गया है। लेकिन अनेक पर्यावरण कानून समूह, कार्य–योजनाओं से नम भूमि का संरक्षण सुनिश्चित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय नम भूमि संरक्षण कार्यक्रम :

1. इस कार्यक्रम को भारत सरकार राज्य सरकारों के समन्वय से क्रियान्वित करती है।
2. पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा देश में 115 नम भूमियों की पहचान की गई जिनमें अत्यावश्यक रूप से संरक्षण एवं प्रबन्धकीय हस्तक्षेप की आवश्यकता है।
3. इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नम भूमियों को संरक्षण के साथ उनको और विकृत होने से रोकने एवं इनके कुशल प्रयोजन स्थानीय समुदाय के सुनिश्चित करने के साथ जैव विविधता को समग्र रूप से संरक्षित करना है।

उदयपुर जिले में झील, तालाब, बांध नम भूमि का चिह्निकरण : उदयपुर जिला प्रशासन ने वेट लेण्ड मैनेजमेन्ट एण्ड कन्जर्वेशन नियम–2010 के नियम 3 संरक्षित आर्द्र भूमि के अनुसार 3 (द्वितीय) क्षेत्र की आर्द्रभूमि जो पारिस्थितिकीय संवेदनशील और महत्त्वपूर्ण है। जैसे राष्ट्रीय उद्यान, समुद्री पार्क, अभयारण्य, संरक्षित वन, वन्यजीव निवासी, गरान, प्रवाल, भित्ति प्राकृतिक सौन्दर्य के विशिष्ट क्षेत्रों या ऐतिहासिक या विरासत वाले क्षेत्रों और अनुवांशिक विविधता क्षेत्र के तहत निम्न तीन वेट लेण्ड मान्य किये गये हैं – (1) **सेई बाँध** : कोटड़ा तहसील का 356 हेक्टेयर (2) **ब्रह्म तालाब** : मेनार, वल्लभनगर तहसील का 217.01 हेक्टेयर (3) **ढंड तालाब** : मेनार, वल्लभनगर तहसील का 304.16 हेक्टेयर। वेट लेण्ड नियम 3 (पंचम) 2500 मीटर ऊँचाई के नीचे की आर्द्र भूमियाँ या आर्द्र भूमि समूहों, जिनका क्षेत्र 500 हेक्टेयर के समतुल्य या अधिक हैं, के तहत निम्न 6 सम्पतियाँ और मान्य की गई – 1. बागोलिया तालाब–मावली तहसील का 552.39 हेक्टेयर। 2. उदयसागर – गिर्वा तहसील की 680 हेक्टेयर। 3. जयसमन्द–सराड़ा तहसील की 5873.52 हेक्टेयर। 4. वल्लभनगर बांध–वल्लभनगर तहसील का 869.16 हेक्टेयर। 5. बड़गांव बाँध–मावली का 1091.56 हेक्टेयर (मोरजाई बांध)। 6. भटेवर तालाब, वल्लभनगर तहसील का 869.83 हेक्टेयर।

नम भूमियों की मुख्य खूबियाँ : उपरोक्त सम्पत्तियों में छिछला पानी एवं जलीय पक्षियों के लिए उपयुक्त स्थल होने से सर्दियों में प्रवासी पक्षी आते हैं। चमगादड़ के लिए उपयुक्त स्थल, वन्य जीवों के लिए जल सुलभ है। दक्षिणी राजस्थान के घोषित महत्त्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र भी हैं। मछलियाँ, मगरमच्छ, कछुए व माल्यूस्केन फ्यूना पाए जाते हैं। बास्किंग और अण्डे देने के लिए सुरक्षित हैं। झील का किनारा काफी अच्छा होने से पक्षी बहुतायत में पाए जाते हैं। मेनार के तालाबों में ग्रेट गेन्ब पक्षी आते हैं। चम्बल नदी में पाया जाने वाला पक्षी और अन्य पक्षियों में येलों तथा व्हाइट वेटलेण्ड नेपविंग यहाँ पाए जाते हैं। इस तरह इन तालाबों में चार तरह के पक्षी मिलते हैं।

उदयपुर में मौसम के रूख में बदलाव आते ही विदेशी पखेरूओं के आने का सिलसिला शुरू हो जाता है। शहर की झीलों में प्रवासी पक्षियों (माइग्रेटरी बर्ड्स) का कलरव गूँजने लगता है। ये पक्षी शहर के साथ ही आसपास के गांवों में भी जलाशयों पर अच्छी संख्या में पहुँचते हैं।

सेई बाँध : उदयपुर जिले की कोटड़ा तहसील की साबरमती नदी की सहायक नदी सेई नदी पर मिट्टी का गुरुत्वाकर्षण बाँध 1978 में 4.07 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किया गया। 1453 मीटर लम्बाई के इस बाँध की ऊँचाई 28 मीटर है एवं स्पिलवे की क्षमता 1756 क्यूबिक मीटर प्रति सैकंड तथा जल भराव क्षमता 31.33 मिलियन क्यूबिक मीटर है। बाँध का मुख्य उद्देश्य पाली जिले में लूनी नदी पर बने जवाई बाँध की ओर पानी डायवर्ट करने हेतु भण्डारण करना है। बाँध स्थल पर सेई नदी का जलग्रहण क्षेत्र 320 वर्ग किलोमीटर है। इस बाँध का निर्माण राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष 1968–69 में प्रारम्भ किया गया। इस बाँध का जलाशय क्षेत्र स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के मध्य बहुत लोकप्रिय है। पक्षी प्रेमी इस बाँध का भ्रमण अवश्य करते हैं, क्योंकि यहाँ पर दुर्लभ प्रजातियों के पक्षी प्रतिवर्ष आते हैं।

सेई बाँध का विशाल स्वरूप

भटेवर तालाब : उदयपुर से करीब 32 कि.मी. दूर वल्लभनगर तहसील में 869.83 हेक्टयर क्षेत्र में फैला यह विशाल तालाब स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों का बहुत पसंदीदा स्थल है। अधिकांश पक्षी प्रेमी पर्यटक इस झील के बारे में अनजान है। यह सुन्दर झील पर्यटकों को अप्रत्याशित रूप से अपनी ओर आकर्षित करती है। इसके भ्रमण के लिए प्रातःकाल का समय सबसे उत्तम है। इस समय अधिकांश पक्षी सक्रिय रहते हैं। इस झील के चारों ओर विचरण करते पक्षियों को देखने के लिए दूरबीन का सहयोग अपेक्षित है। उदयपुर की अन्य झीलों के विपरीत इस झील के चारों ओर पहाड़ नहीं दिखते हैं लेकिन उदयपुर क्षेत्र की यात्रा में यह स्थान बेहद खूबसूरत और दर्शनीय है।

बागोलिया तालाब : मावली तहसील के बड़ियार पंचायत में मावली–नाथद्वारा रोड पर 552.39 हेक्टयर में फैले इस विशाल पक्षी पसंदीदा तालाब का निर्माण वर्ष 1956 में हुआ। यह तालाब इस क्षेत्र में पेयजल एवं सिंचाई का सबसे बड़ा स्रोत है। परन्तु इसमें नियमित रूप से पानी की आवक नहीं होने से जल संकट की समस्या बनी रहती है। वर्ष 1981 से 2007 तक के उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर यह तालाब वर्ष 2006 में छलका। इसके बाद अपनी पूर्ण क्षमता 21.6 फीट तक कभी नहीं भरा। रखरखाव के अभाव में तालाब की पाल पर बड़ी–बड़ी कंटीली झाड़ियाँ एवं अंग्रेजी बबूल पनप गये हैं। इस तालाब में चार मार्गों से पानी आता है। प्रथम मार्ग घोड़ाघाटी एनीकट से होते हुए भानसोल, गढ़वाड़ा, जावद, थामला, बड़ियार एनीकट, दूसरा मार्ग शिशवी, सिन्दू, महूड़ा, पलाना कलां, भारोड़ी, मोरड़ी होते हुए, तीसरा मार्ग सालोर, मोगाना, बड़ियार से तथा चौथा मार्ग उथनोल, देपर होता हुआ थामला तालाब में पानी आता था। इसके रास्ते में छोटे–छोटे एनीकट बन गए हैं, इसलिए आगे बागोलिया भी खाली पड़ा रहता है। यह तालाब स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों में काफी लोकप्रिय क्षेत्र है, क्योंकि इसके चारों ओर खेती होने से पानी एवं दाने की कोई समस्या नहीं है। इस तालाब की जल आवक बढ़ाने के लिए उदयसागर से पानी लाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके तहत उदयसागर से नहर या पानी की पाइपलाइन द्वारा ढाणा, मेड़ता, ओड़वाड़िया, खेमली होते हुए पानी बागोलिया तक लाया जा सकता है। उदयसागर से ड़बोक तक वर्तमान में नहर बनी हुई है। इस कार्य को राज्य सरकार को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण करना चाहिये। देवास–तृतीय व चतुर्थ से भविष्य में मिलने वाले अतिरिक्त पानी से इस तालाब को प्रत्येक वर्ष भरा जा सकता है।

उदयसागर, वल्लभनगर, बड़गांव बाँध के साथ मेनार, भटेवर, बागोलिया जैसे विशाल जलाशयों के इस क्षेत्र को मेवाड़ के अन्न उत्पादक क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता था। यहाँ की भूमि काफी उर्वरक होने के साथ ही यहाँ के किसान भी अथक परिश्रमी हैं। पूर्व में यहाँ गन्ना, चावल, कपास जैसी नकदी फसलों का उत्पादन विशेष रूप से होता था। इस क्षेत्र को अपनी पूर्व पहचान दिलाने हेतु उपरोक्त बाँध एवं तालाब जो वर्तमान में अधिकांश समय रिक्त अवस्था में रहते हैं, उन्हें दूसरे जलग्रहण क्षेत्र से नियमित रूप से अतिरिक्त जल उपलब्ध करवाया जा सकता है। इसी के साथ यह क्षेत्र पक्षियों के लिए भी उत्तम आवास एवं प्रजनन स्थल के रूप में अपनी पहचान रखता है, जिसे और अधिक विकसित किया जा सकता है। देवास-तृतीय एवं चतुर्थ परियोजना को शीघ्र पूर्ण कर इनके संरक्षित जल से इस क्षेत्र की पुनः कायाकल्प की जा सकती है।

राजस्थान की महत्वपूर्ण रामसर साइट्स : राजस्थान में मात्र दो रामसर साईट्स हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है :–

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान : केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान या केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान पूर्व में भरतपुर पक्षी अभयारण्य के रूप में जाना जाता था। यह राजस्थान के भरतपुर में अविफौना (चिड़िया एवं पक्षीवृंद सामूहिक रूप) अभयारण्य के रूप में भी प्रसिद्ध है। यह उद्यान भरतपुर के दक्षिण–पूर्व में 2 कि.मी. और आगरा के पश्चिम में 55 कि.मी. दूर स्थित है। पक्षियों की 350 से अधिक प्रजातियाँ यहाँ निवास करती है। यह एक प्रमुख पर्यटन केन्द्र भी है, जहाँ शीत ऋतु में अच्छी संख्या में पक्षीविदों का पड़ाव रहता है। यह 1971 में एक संरक्षित अभयारण्य घोषित किया जाकर एक विश्व धरोहर भी है। यह राष्ट्रीय उद्यान एक मानव निर्मित और मानव प्रबन्धित आर्द्रभूमि है और भारत के राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है। पूर्व में इसे मुख्य रूप से जलपक्षी शिकारगाह के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। 29 वर्ग कि.मी. (2873 हेक्टयर) संरक्षित क्षेत्र स्थानीय स्तर पर घाना के रूप में जाना जाता है। यह सूखे घास के मैदान, वुडलैंड्स, वुडलैंड दलदलों और आर्द्रभूमि का सम्मिश्रण है। यह उद्यान 366 पक्षी, 379 पुष्प, 50 मछली, 13 साँपों, 5 छिपकलियों, 7 उभयचर, 7 कछुओं एवं अन्य अकशेरूकीय प्रजातियों का निवास स्थल है। प्रतिवर्ष हजारों प्रवासी जलपक्षी सर्दियों में प्रवास और प्रजनन के लिए इसकी यात्रा करते हैं। यह अभयारण्य दुनिया में सर्वाधिक पक्षी वाले क्षेत्रों में से एक है। सर्दियों में दुर्लभ साइबेरियन क्रेन इस उद्यान में प्रवास करते थे। यह पक्षी अब विलुप्त होने के कगार पर है। वर्ड वाइल्ड लाईफ फण्ड के संस्थापक पीटर स्कॉट के अनुसार केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान दुनिया के सबसे अच्छे पक्षी क्षेत्रों में से एक है।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

साईबेरियन क्रेन

सारस क्रेन

साईबेरियन क्रेन समूह

उद्यान में अन्य पक्षी एवं वन्य जीव

यह अभयारण्य 250 वर्ष पूर्व बनाया गया था और इसकी सीमाओं के भीतर एक केवलादेव (शिव) मन्दिर है, उसी नाम से इस अभयारण्य का नामकरण किया गया। प्रारम्भ में यह एक प्राकृतिक निचला क्षेत्र था। बाद में भरतपुर रियासत के शासक महाराजा सूरजमल (1726–1763) द्वारा अजन बण्ड बनाकर इसे भरा गया। यह बण्ड दो नदियों गंभीरी एवं बाणगंगा के संगम स्थल पर बनाया गया था। यह उद्यान भरतपुर महाराजाओं के लिए शिकार स्थल था। इसे 13 मार्च, 1976 को पक्षी अभयारण्य और अक्टूबर, 1981 में नम भूमि संरक्षण के तहत एक रामसर साईट के रूप में नामित किया गया था। 10 मार्च, 1982 में इसे राष्ट्रीय उद्यान के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। वर्ष 1985 में वर्ल्ड हेरिटेज कन्वेशन के तहत इसे वर्ल्ड हेरिटेज साईट घोषित किया गया। यह राजस्थान वन अधिनियम 1953 के तहत एक आरक्षित वन क्षेत्र है और भारतीय संघ के राजस्थान राज्य की सम्पत्ति है। 1982 में इस उद्यान में चराई पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। यह उद्यान एक दुर्लभ और लुप्तप्रायः प्रजातियों का आश्रय स्थल होने के साथ प्रवासी जलपक्षियों के लिए अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व की एक आर्द्रभूमि है। यह दुर्लभ साइबेरियन क्रेन के लिए सर्दियों का प्रवास स्थल रहा है। बड़ी संख्या में घोंसला बनाने वाले पक्षियों का भी यह आवास स्थल है।

साँभर लेक : यह भारत की सबसे बड़ी अन्तर्देशीय नमक झील है, जो जयपुर के दक्षिण–पश्चिम में 80 कि.मी. एवं अजमेर के उत्तर–पूर्व में 64 कि.मी. दूर स्थित है। यह ऐतिहासिक साँभर झील लेक टाऊन से घिरी हुई है। इस झील में मेड़ता, सामोद, मंथा, रूपगढ़, खारी एवं खंडेला नदियों का पानी मिलता है। झील का जलग्रहण क्षेत्र 5700 वर्ग कि.मी. है। यह झील एक विस्तृत खारी आर्द्रभूमि है जिसकी गहराई शुष्क मौसम में 60 से.मी. से कम होने के साथ मानसून के अन्त में 3 मीटर तक हो जाती है। यह मौसम के आधार पर 190 से 230 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैली हुई रहती है। यह झील अण्डाकार आकार की है, जिसकी लम्बाई 35.5 कि.मी. एवं चौड़ाई 3–11 कि.मी. के मध्य रहती है। यह झील नागौर, जयपुर एवं अजमेर जिलों के मध्य विस्तारित है। झील की परिधि 96 कि.मी. है और यह चारों तरफ से अरावली पहाड़ियों से घिरी हुई है। साँभर झील बेसिन को सेण्डस्टोन से बने 5.1 कि.मी. लम्बे बाँध से विभाजित किया गया है।

साँभर लेक में नमक उत्पादन प्रक्रिया

खारे पानी की एक निश्चित सान्द्रता तक पहुँचने के बाद इसके पानी को पश्चिम से पूर्व की ओर बाँध के गेट को उठाकर छोड़ा जाता है। बाँध की पूर्व दिशा में नमक के वाष्पीकरण वाले तालाब है, जहाँ हजारों वर्षों से नमक बनाया जाता है। यह पूर्वी क्षेत्र 80 वर्ग कि.मी. है और इसमें संकीर्ण बण्ड द्वारा अलग किये गये नमक के जलाशय, नहरें और नमक के थाले शामिल है। बाँध के पूर्व में एक रेल मार्ग है जिससे साँभर साल्ट लेक के कार्यस्थल को साँभर लेकसिटी से जोड़ा गया है।

साँभर साल्ट लेक भारत की सबसे बड़ी खारी झील है और राजस्थान के अधिकांश नमक उत्पादन का मुख्य स्रोत है। यहाँ प्रतिवर्ष 1. 96 लाख टन स्वच्छ नमक का उत्पादन होता है जो भारत के कुल नमक उत्पादन का लगभग 9 प्रतिशत है। नमक का उत्पादन खारे पानी के वाष्पीकरण द्वारा किया जाता है और इसे ज्यादातर सरकारी स्वामित्व वाली कम्पनी साँभर साल्ट्स लिमिटेड जो हिन्दुस्तान साल्ट्स लिमिटेड और राजस्थान सरकार के संयुक्त उद्यम द्वारा संचालित है।

साँभर झील को रामसर साइट (अन्तरराष्ट्रीय आर्द्रभूमि) के रूप में नामित किया गया है, क्योंकि यह आर्द्रभूमि हजारों गुलाबी राजहंसों और अन्य पक्षियों का महत्त्वपूर्ण शीतकालीन क्षेत्र है जो उत्तरी एशिया और साइबेरिया से आते हैं। झील में पनपने वाले विशेष शैवाल, काई और बैक्टिरिया जो पानी को विशेष रंग प्रदान करते हैं और झील पारिस्थितिकी तंत्र में सहयोग से पलायन करने वाले जल पक्षियों को झील में बनाए रखते हैं। पास के जंगलों में वन्य जीव हैं जहाँ हिरण, लोमड़ियाँ, नीलगाय आदि स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं।

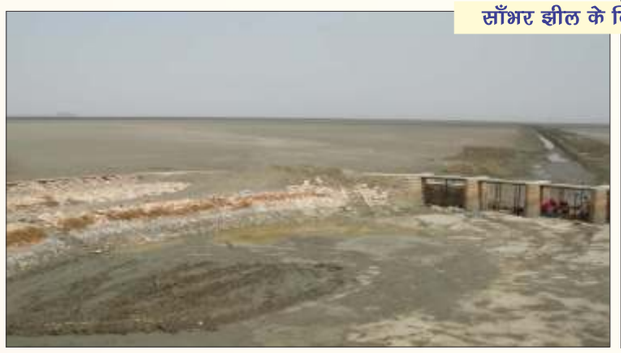

साँभर झील के विविध स्वरूप